जून (द्वितीय) 2021 | ₹ 30.00

चंपक

Take a Trip!

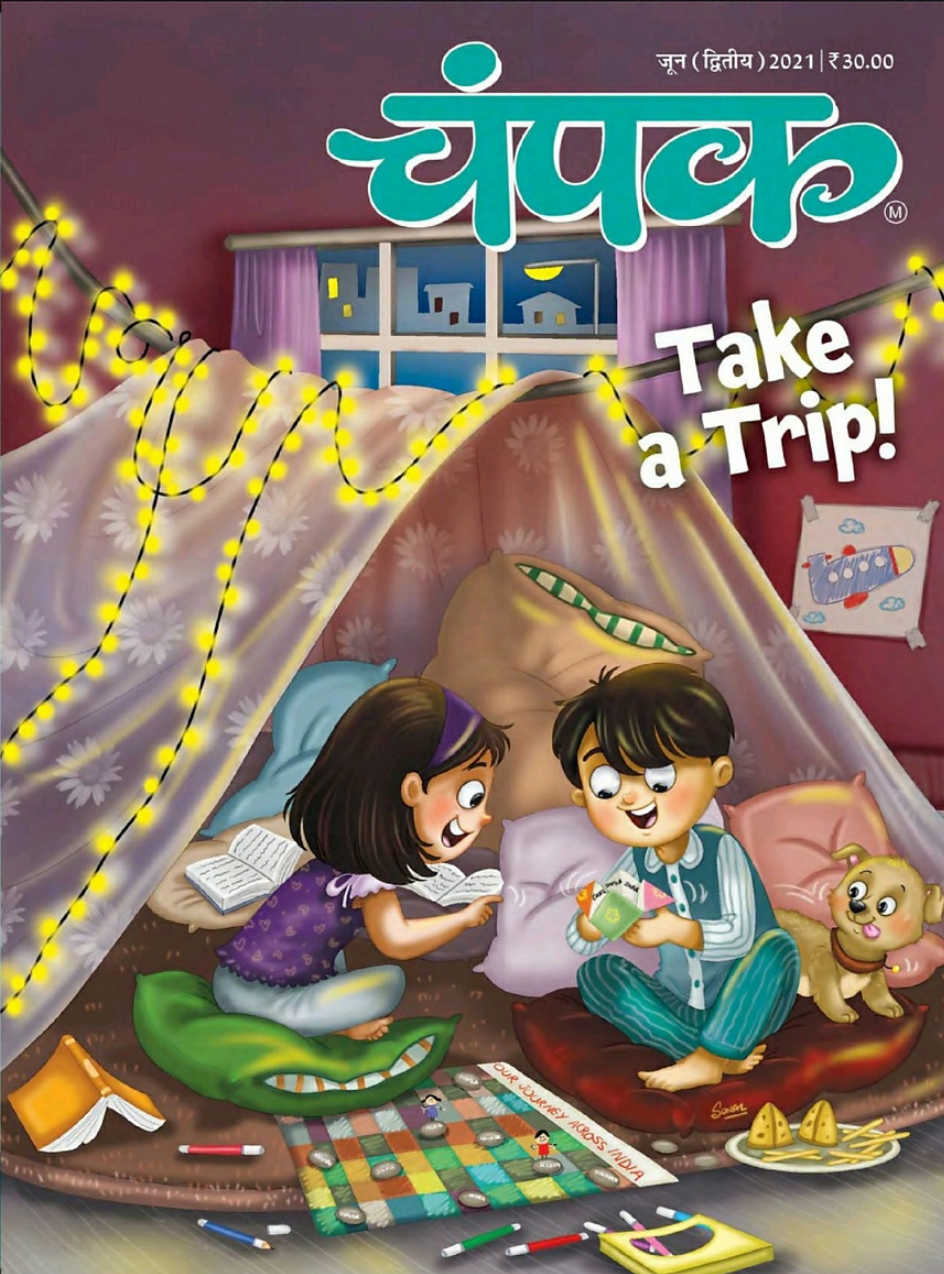

HAPPIER CHILDHOODS GUARANTEED

If you are looking for magazines that will help spark the imagination of your child, look no further! Dedicated to broadening the horizons of children aged 2-12 years, *Champak*, *Highlights Genies* and *Highlights Champs* are an essential part of your child's reading list.

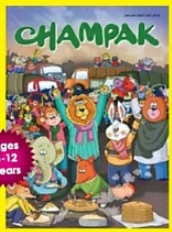

India's largest read children's magazine

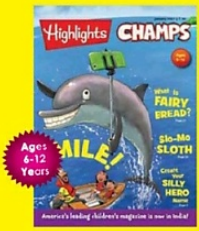

America's leading children's magazine is now in India!

America's leading early childhood magazine is now in India!

To subscribe : SMS 8588843436 | Call toll free no.1800 103 8880 | visit www.delhipress.in/subscribe | email subscription@delhipress.in

चंपक

जून (द्वितीय) 2021 अंक : 1215

संस्थापक
विश्वनाथ
1917–2002

सुनो कहानी

शरारती मीकू	4
रेत के टीलों पर ऊंट नाचा किस ने देखा	11
पहाड़ों की रानी	19
अंतरिक्ष की सैर	26
ब्लू माउंटेन	31
अनूठा अनाथालय	38
असली महामारी	46

मुखपृष्ठ

कोरोना वायरस महामारी के दौर में भी हम अपनी यात्रा को कहानियों के माध्यम से संभव बना सकते हैं. हमारे साथ जुड़िए और पूरे विश्व तथा उस के बाहर संभावित स्थानों की यात्रा कीजिए.

मन बहलाओ

सुंदर रंग भरो	8
देखो हंस न देना	10
रास्ता बताओ	15
बताओ तो जानें	16
घर का चुनाव करें	18
गंतव्य स्थान बताएं	23
बिंदु मिलाओ	30
स्मार्ट	36
अंतर बताओ	43

चित्र कथाएं

डमरू और जंक मेल	9
चीकू	24
दादाजी और अंतर्राष्ट्रीय पिकनिक दिवस	44

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान	17

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.
Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं को सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 30.00 (बिना सीडी के),
वार्षिक रु. 576, दो वर्ष रु. 1050. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें:
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, वडाला उद्योग भवन, नैगांव क्रौस रोड, वडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

- रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
- निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
- संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
- ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं :
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

शरारती मीकू

कहानी ● सौमित्र कानूनगो

चंपकवन में बारिश का मौसम शुरू हो गया था. मौसम का फायदा उठाने और कुछ पैसे कमाने के लिए डमरू गधे ने बारिश के मौसम को देखते हुए दुकान खोल कर छाते बेचने का काम शुरू कर दिया.

डमरू जोरजोर से चिल्लाया, ''ले लो भाई, छोटेबड़े, लंबेमोटे, आतीजाती बारिश को जो झट से रोके ऐसे नए रंगीन छाते.'' कुछ यों चिल्ला कर वह अपने छाते बेच रहा था.

एक दिन जंबो हाथी उस की दुकान के पास से गुजरा, जंबो को अपने विशाल शरीर पर बहुत घमंड था और वह अपना बहुत खयाल रखता था. उस ने डमरू से कहा, ''एक बड़ा सा छाता मेरे लिए भी निकाल दो, जिस में मेरा पूरा शरीर समा जाए और बारिश की एक भी बूंद मुझे न छू सके, क्योंकि मुझे बारिश में भीगना बिलकुल पसंद नहीं है.''

डमरू ने जंबो को एक बड़ा सा छाता निकाल कर दे दिया. जंबो छाता ले कर आगे बढ़ा ही था कि बूंदाबांदी शुरू हो गई. उस ने अपना छाता खोला और मुसकराता हुआ अपने घर की ओर जाने लगा.

रास्ते में उसे मीकू चूहे ने रोका और कहा, ''सुनो जंबो, बारिश हो रही है. मैं अपना छाता घर भूल गया हूं. आप मुझे अपने छाते में घर तक छोड़ सकते हैं?''

जंबो ने मुंह बनाया और मीकू से कहा, ''मीकू, अगर किसी दिन मैं अपना छाता भूल गया और तुम से तुम्हारे छाते में लिफ्ट मांगी तो क्या तुम्हारे छोटे से छाते में मैं समा पाऊंगा? क्या तुम मुझे लिफ्ट दे पाओगे? नहीं न? इसलिए तुम अपने साइज वालों से ही लिफ्ट मांगो तो ठीक रहेगा,'' ऐसा कह कर जंबो मीकू पर हंसते हुए निकल गया. जंबो की यह बात मीकू को बहुत बुरी लगी. वह दिन भर इस बात पर सोचता रहा और उस ने जंबो से बदला लेने की ठान ली.

मीकू ने योजना बनाई और रात में जंबो के घर की

खिड़की से उस के घर में घुसा और जंबो के छाते को कुतरकुतर कर उस में एक बड़ा सा छेद कर दिया. सुबह जंबो उठा तो उस ने देखा कि बारिश हो रही है. उस ने अपना छाता लिया और खेत में जाने के लिए घर से बाहर निकला, पर ज्यों ही बारिश से बचने के लिए उस ने छाता खोला, छाते के बड़े से छेद से उस पर बारिश की बूंदों की बौछार हो गई और वह पूरा भीग गया. जंबो ने गुस्से से अपने छाते के उस बड़े से छेद को देखा और छाता फेंक कर घर के भीतर चला गया.

लेकिन जंबो को समझ नहीं आ रहा था कि कल तक तो उस का छाता ठीक था, अचानक आज उस में यह बड़ा छेद कैसे हो गया? इधर मीकू छिप कर जंबो को देख रहा था. उसे बारिश से भीगता देख मीकू को बड़ा मजा आया.

अचानक मीकू के सामने से उस की पुरानी दुश्मन लिली बिल्ली गुजरी. वह भी अपने हाथ में एक रंगबिरंगा छाता ले कर जा रही थी. मीकू ने ज्यों ही छाता देखा, उस ने सोचा, 'लगे हाथ अपनी दुश्मन लिली से भी बदला ले लिया जाए,' मीकू ने चुपके से उस का पीछा किया तो देखा लिली बिल्ली ब्यूटी पार्लर की तरफ जा रही है. लिली अपना गीला छाता ब्यूटी पार्लर के गेट के बाहर सूखने के लिए रख कर अंदर चली गई. मीकू ने सोचा कि यह सही मौका है. वह चुपके से छाते के पास गया और उस में तीन बड़ेबड़े छेद कर दिए. लिली अपना मेकअप करवा कर सजधज कर बाहर निकली और अपना छाता ले कर चलने लगी. तभी उस के छाते के तीन बड़ेबड़े छेदों में से अंदर पानी गिरा और लिली का सारा मेकअप पानी में बह गया. मेकअप बिगड़ जाने से वह बिलकुल भूत लग रही थी. मीकू छिप कर उसे देख रहा था और अपना पेट पकड़ कर हंस रहा था.

मीकू को अब अपनी शरारत पर मजा आने लगा था और फिर उस ने लमही लोमड़ी, मानू बंदर, बन्नी भालू, गिल्ली गिलहरी से ले कर जंगल के किसी भी जानवर के छाते को कुतरने से नहीं छोड़ा था.

बारिश में सभी जानवरों के छाते बेकार हो गए. छातों में छेद हो जाने के कारण वे छाता ले कर बारिश में जाते तो भीग जाते. सभी इस बात से बहुत परेशान हो गए. सभी को लगा की डमरू के छातों की क्वालिटी ठीक नहीं है और इसलिए सभी जानवर इकट्ठा हो कर डमरू से लड़ने उस की दुकान पर पहुंच गए.

मीकू भी मजे लेने के लिए उन के साथ था. डमरू ने समझाया, "देखो भाई, मुझ से छाता लेते समय तो किसी का भी छाता खराब नहीं था. इस का मतलब है किसी ने आप लोगों के साथ यह शरारत की

है और इस की शिकायत हमें राजा शेरसिंह से करनी चाहिए.''

सभी को डमरू की बात जम गई और सभी राजा शेरसिंह के पास चले गए. मीकू चूहे को अपने आप पर पूरा भरोसा था कि कोई भी उस की इस शरारत को नहीं पकड़ सकता, इसलिए वह भी सभी के साथ राजा के पास चला गया.

जब सभी वहां पहुंचे तो राजा शेरसिंह अपने मंत्री चीकू खरगोश के साथ अपने महल के आगे बगीचे में टहल रहे थे. सभी ने जा कर शेरसिंह को अपनी बात बताई. राजा इस अजीब मामले को सुन कर सन्न रह गए. उन्हें समझ नहीं आया कि आखिर इस मामले में क्या करना है? उन्होंने अपने मंत्री चीकू की ओर देखा. चीकू ने कुछ जानवरों के छातों को गौर से देखा और मुसकराया.

चीकू को एक तरकीब सूझी उस ने राजा के कान में कुछ फुसफुसाया, फिर डमरू से कहा, ''डमरू, यह सब नालायक हैं. इतनी सी बात के लिए हमारे राजा को परेशान कर रहे हैं. छतरी में छेद जैसी छोटी समस्या को हल करने का समय थोड़ी है हमारे राजा शेरसिंह के पास. डमरू, तुम यह बताओ कि वह बुद्धिमान कौन है, जिस की छतरी में छेद की तुम्हारे पास कोई शिकायत नहीं आई है. राजा शेरसिंह उस बुद्धिमान व्यक्ति को उन का समय बरबाद नहीं करने के लिए इनाम देना चाहते हैं.''

मीकू इनाम की बात सुन कर खुद को रोक नहीं पाया और बीच में ही बोल पड़ा, ''अरे, यह डमरू क्या बताएगा, मैं हूं वह बुद्धिमान, जिस की छतरी में एक भी छेद नहीं है और यह रही मेरी छतरी, चाहो तो खुद देख लो.''

चीकू ने मीकू से कहा, ''मुझे पता था कि तुम्हारी छतरी में छेद नहीं होगा, ''क्योंकि चोर दूसरे के घर में चोरी करता है पर अपने घर में कभी नहीं.''

राजा शेरसिंह और अन्य लोगों ने चीकू से कहा, ''हम

कुछ समझ नहीं पा रहे हैं, साफसाफ बताओ.''

चीकू ने कहा, ''बात यह है कि यह शरारत आप के साथ और किसी ने नहीं की, बल्कि मीकू ने की है, क्योंकि उस की छतरी में छेद नहीं है. उस ने चालाकी से आप सब की छतरियों में तो छेद कर दिए, पर अपनी छतरी भूल गया और इनाम के लालच में यहां सब के सामने कह भी दिया. छातों में जो छेद हैं, वह किसी चूहे के कुतरने के निशान हैं, जो साफतौर पर मीकू ही है.''

सभी मीकू की तरफ देख कर उसे घूरने लगे. मीकू चूहे ने भी अपना सिर खुजाते हुए यह कुबूल लिया की यह शरारत उसी की है.

राजा शेरसिंह को मीकू चूहे को सजा सुनाने के बजाय उस की इस अजीब शरारत पर हंसी आ गई. इतने में बादल गरजने लगे और मूसलाधार बारिश शुरु हो गई. अचानक बारिश देख कर छतरियों में छेद के बारे में भूल कर आदतन सभी ने अपनी छतरियां खोल लीं और सभी एकदूसरे को भीगता और छतरियों में छोटेबड़े छेद देख कर हंसने लगे. जंबो भी अपनी हंसी नहीं रोक पाया.

उधर सब को बारिश में अपनी छेद वाली छतरियों में खड़ा देख कर चीकू और शेरसिंह अपनी हंसी नहीं रोक पा रहे थे और लोटपोट हुए जा रहे थे. आखिरकार मीकू ने राजा शेरसिंह समेत सभी से माफी मांगी. सभी ने उसे उस की शरारत के लिए माफ कर दिया और बारिश का मजा लेते हुए सभी अपनी छतरियां फेंक कर एकदूसरे के साथ नाचने लगे. ●

सुंदर रंग भरो

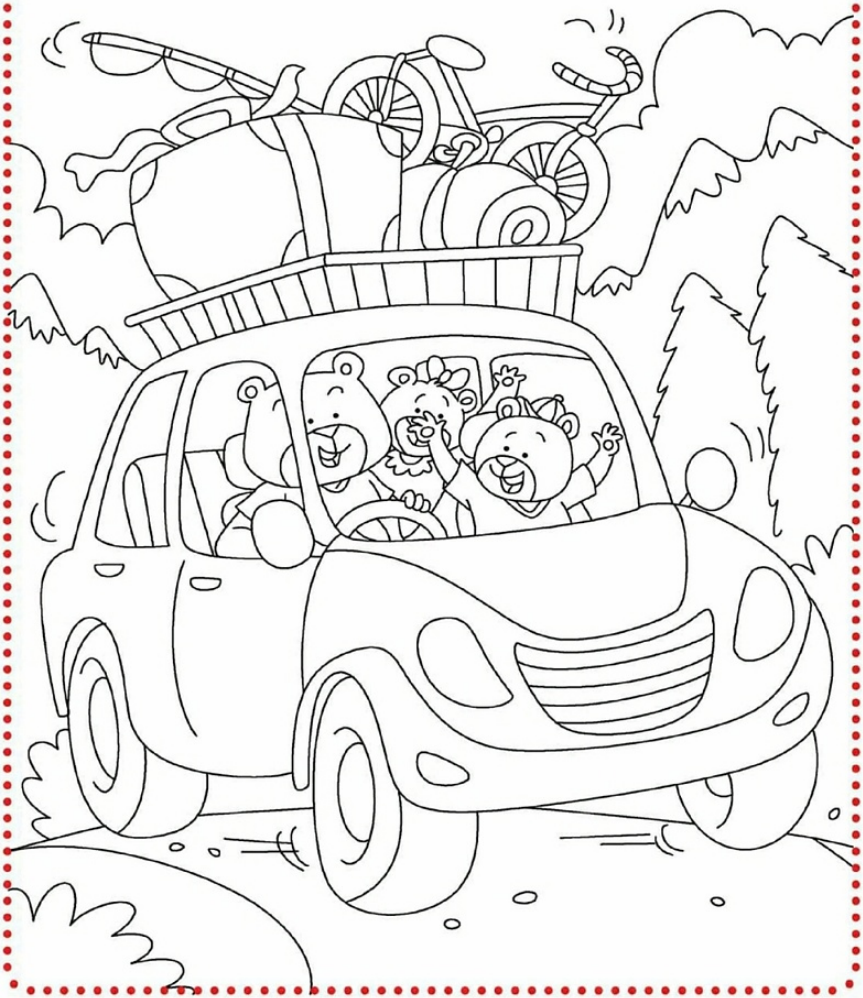

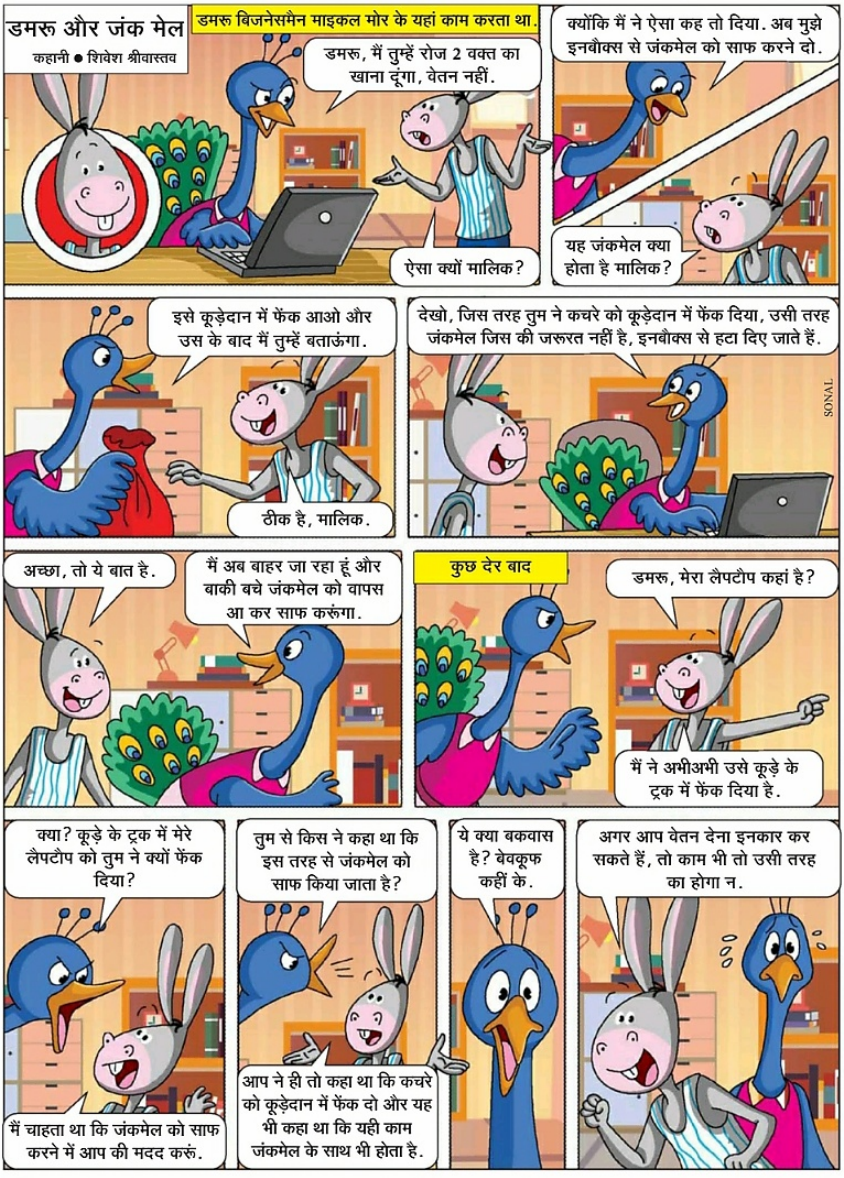
डमरू और जंक मेल
कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव
डमरू बिजनेसमैन माइकल मोर के यहां काम करता था.
डमरू, मैं तुम्हें रोज 2 वक्त का खाना दूंगा, वेतन नहीं.
ऐसा क्यों मालिक?
क्योंकि मैं ने ऐसा कह तो दिया. अब मुझे इनबौक्स से जंकमेल को साफ करने दो.
यह जंकमेल क्या होता है मालिक?
इसे कूड़ेदान में फेंक आओ और उस के बाद मैं तुम्हें बताऊंगा.
ठीक है, मालिक.
देखो, जिस तरह तुम ने कचरे को कूड़ेदान में फेंक दिया, उसी तरह जंकमेल जिस की जरूरत नहीं है, इनबौक्स से हटा दिए जाते हैं.
SONAL
अच्छा, तो ये बात है.
मैं अब बाहर जा रहा हूं और बाकी बचे जंकमेल को वापस आ कर साफ करूंगा.
कुछ देर बाद
डमरू, मेरा लैपटौप कहां है?
मैं ने अभीअभी उसे कूड़े के ट्रक में फेंक दिया है.
क्या? कूड़े के ट्रक में मेरे लैपटौप को तुम ने क्यों फेंक दिया?
मैं चाहता था कि जंकमेल को साफ करने में आप की मदद करूं.
तुम से किस ने कहा था कि इस तरह से जंकमेल को साफ किया जाता है?
आप ने ही तो कहा था कि कचरे को कूड़ेदान में फेंक दो और यह भी कहा था कि यही काम जंकमेल के साथ भी होता है.
ये क्या बकवास है? बेवकूफ कहीं के.
अगर आप वेतन देना इनकार कर सकते हैं, तो काम भी तो उसी तरह का होगा न.

देखो हंस न देना

रिशान और सार्थक एकसाथ बास्केट बॉल खेल रहे थे. रिशान : बताओ, कौन सा खिलाड़ी बास्केट से भी ऊंचा कूद सकता है?
सार्थक : पता नहीं.
रिशान : हर कोई कूद सकता है, क्योंकि बास्केट कूद नहीं सकती है.

रिद्धि सेतिया, 11 वर्ष, लखनऊ

रोहित (रोहन से) : ऐसा कौन सा गेट है, जिस के अंदर तुम आजा नहीं सकते?
रोहन : मुझे नहीं पता.
चिंटू : कौलगेट.

सर्वज्ञ सुबोध, 12 वर्ष, लखनऊ

कोमल (विमल से) : हमारे प्रधानमंत्री रात को ही राष्ट्र को संबोधित क्यों करते हैं?
विमल : क्योंकि वे हमारे पी.एम. हैं. ए.एम नहीं.

समर्थ गुप्ता, 8 वर्ष, पुणे

किट्टू (सीटू से) : ऐसा क्या है जिसे हम ब्रैकफास्ट में नहीं खा सकते हैं?
सीटू : लंच और डिनर

श्रवण एन, 11 वर्ष, पुणे

सुमन (सौरभ से) : जब एक शार्क ने क्लाउन फिश को खाया लिया तब क्या कहा?
सौरभ : इस का स्वाद तो बड़ा ही फनी है.

राशिदा पतंगवाला, 11 वर्ष
गुजरात

हाहाहा हाहाहा हीहीहीं हीहीहीं

केशव (विवेक से) : दुनिया का सब से बड़ा ऐंट कौन सा है?
विवेक : ऐलीफैंट.

ग्रेस, 11 वर्ष
अमृतसर

मीशू (किट्टू से) : क्या क्लौक ने एग्जाम में अच्छा स्कोर हासिल किया?
किट्टू : हां, इस के पास बहुत सारे टिप्स थे.

आनया स्मिरांशि, 6 वर्ष
भुवनेश्वर

राम, श्याम, मीना और टीना हर्ष के घर गए और उस की मम्मी से कहा : आंटी, क्या हर्ष खेलने के लिए बाहर आएगा?
आंटी (गुस्से से) : सौरी, बाहर बहुत अधिक ठंड है.
बच्चे : ऐसे में क्या हर्ष का फुटबौल खेलने के लिए आप बाहर फेंक सकती हैं?

वैभव श्रीवास्तव, 14 वर्ष
अमृतसर

आर्यन (नेहा से) : नेहा, मैं तुम्हें एक छोटा और एक लंबा जोक सुनाऊंगा.
नेहा : ओके, सुनाओ.
आर्यन : जोक. जो...ओ...क....

यश चौधरी, 6 वर्ष
पटना

आर्ट टीचर (चिंटू से) : चिंटू, मैं ने तुम्हें एक बैक्टीरिया ड्रा करना बताया था, लेकिन तुम ने मुझे एक ब्लैंकशीट क्यों सौंपी?
चिंटू : लेकिन सर, क्या आप नहीं जानते कि इन नंगी आंखों से बैक्टीरिया देखे नहीं जा सकते.

सम्यक छाजेर, 10 वर्ष
भुवनेश्वर

पापा (रवि से) : क्या मैं एक सैंडविच ले सकता हूं?
रवि : नहीं, पापा.
पापा : क्यों, बेटा?
रवि : यह सैंड (रेत) से बना है जिसे आप ने समुद्र किनारे बीच पर देखा था.

श्रीनिवास रामानुजम, 6 वर्ष
मुंबई

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमेल : **writetochampak@delhipress.in**
और **SMS: 8657402248**
ऑनलाइन विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

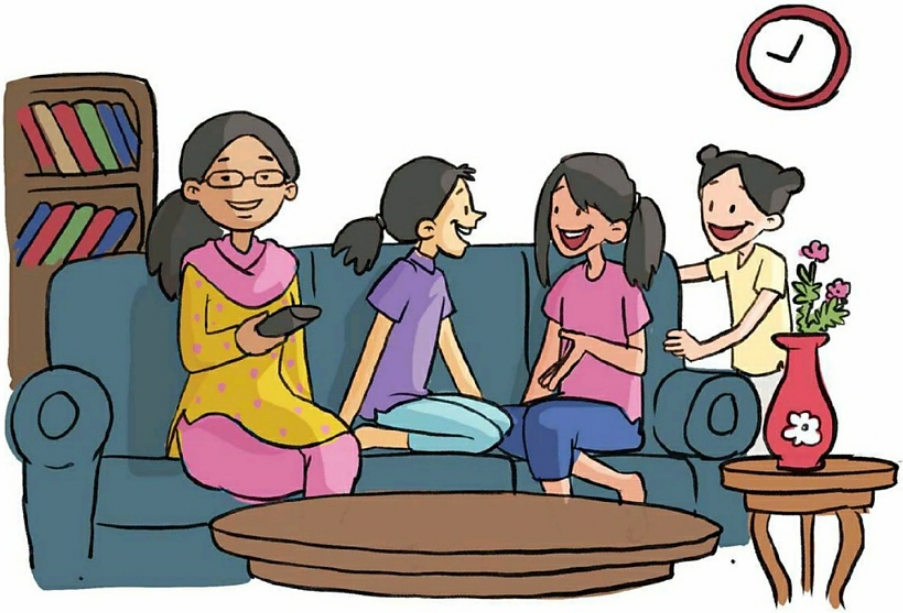

रेत के टीलों पर ऊंट नाचा किस ने देखा

कहानी ● इंद्रजीत कौशिक

‘‘मां, इस बार हम गर्मियों की छुट्टियों में घूमने कहां जा रहे हैं?’’ 10 साल की ईशा अपनी छोटी बहन मायरा को देख कर हंसी और मां से यह सवाल पूछ लिया.

ईशा की तरफ मुड़ कर मायरा ने पूछा, ‘‘वैसे दीदी, पिछले साल हम छुट्टियों में घूमने कहां गए थे? क्या तुम्हें याद है?’’

‘‘फिर शुरू हो गई तुम दोनों, तुम अच्छी तरह जानती हो कि इन दिनों दुनियाभर में क्या हो रहा है? घूमना तो दूर, हमें घर से बाहर निकलने तक में सोचना पड़ता है,’’ ईशा की मां टीवी पर चल रही न्यूज देखते हुए बोलीं.

‘‘पता नहीं इस कोरोना वायरस की हम से क्या दुश्मनी है, न हम स्कूल जा पा रहे हैं और न ही घूमने,’’ ईशा निराशा से बोली.

अभी इन तीनों की बातें चल ही रही थीं कि तभी पिंकी वहां आ गई. पिंकी ईशा और मायरा की छोटी बहन थी.

‘‘मां, मेरी सहेली पूजा कह रही थी कि ऊंट जैसा बड़ा जानवर भी नाच सकता है. मैं ने उस से कह दिया कि यह बस एक कहानी है. मैं ने सही कहा न मां?’’

‘‘बेटा, यह कहानी नहीं बल्कि हकीकत है.

लगभग 2 साल पहले हम ने भी ऊंट को रेत के टीले पर नाचते हुए देखा था,'' मां ने उत्तर दिया तो पिंकी का मुंह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया.

''कब, कहां पर देखा था मां आप ने? मुझे तो यकीन ही नहीं हो रहा. विस्तार से बताओ न मां,'' पिंकी की उत्सुकता बढ़ गई.

''तब तू अपनी नानी के यहां गई हुई थी, इसलिए हमारे साथ घूमने नहीं चल पाई, लेकिन जब हम बीकानेर ट्रिप पर गए तो ईशा और मायरा दोनों हमारे साथ थीं.''

''क्या यह वही बीकानेर है जो रसगुल्लों और भुजिया के लिए प्रसिद्ध है? पर इन दोनों का ऊंट के नृत्य से क्या संबंध है?'' पिंकी ने मां के पास बैठ कर पूछा.

''हां, दरअसल हम दोनों ने तो तब ऊंट की सवारी भी की थी. ऊंट पर बैठे ऐसा लग रहा था मानो सागर की लहराती लहरों पर कोई जहाज हिचकोले खा रहा हो,'' ईशा ने भी अपनी याद ताजा करते हुए कहा.

''लेकिन मां, पिंकी को यह मत बताना कि ऊंट पर सवारी के दौरान डर के मारे मैं कितनी डरी हुई थी और कैसे रोने लगी थी,'' मायरा ने अपनी पोल खुद ही खोल दी, जब मायरा ने मासूमियत से अपने राज का खुलासा किया तो सब हंस पड़े.

''चलो, इसी बहाने हम उस ट्रिप को याद कर उस यात्रा का फिर से अनुभव करें और उस दौरान देखी गई जगहों को याद करें. इस तरह पिंकी को हमारी यात्रा का एहसास हो सकता है, तो चलिए,

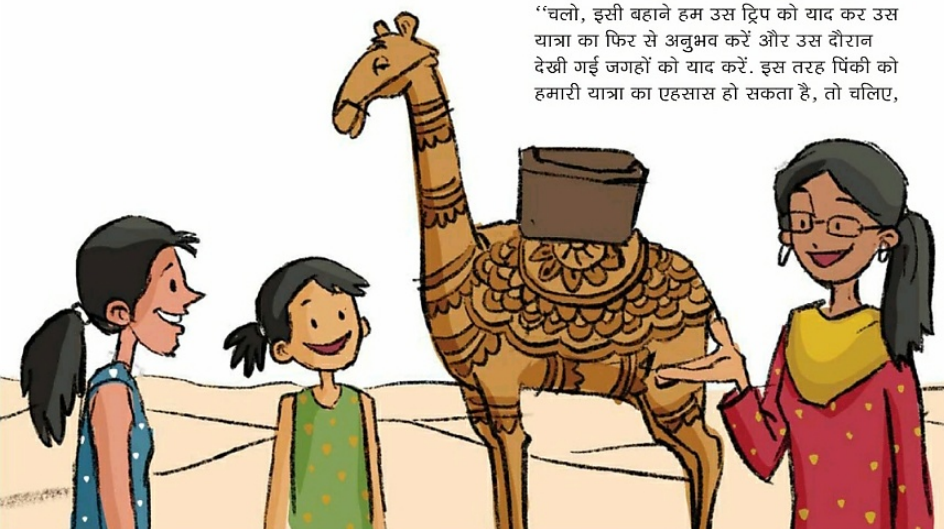

पिंकी को अपने अनुभव बताते हैं, जैसे वह भी हमारे साथ यात्रा कर रही है,'' मां ने कहते हुए पिंकी को अपनी गोद में बिठा लिया.

दरअसल, उन का परिवार 2 साल पहले इंटरनैशनल कैमल फैस्टिवल के दौरान बीकानेर की सैर पर आया था.

राजस्थान के बीकानेर शहर में बहुत बड़ी तादाद में ऊंट पाए जाते हैं. इतना ही नहीं रेगिस्तान का जहाज कहलाने वाले ऊंट के बारे में रिसर्च करने के लिए बीकानेर में राष्ट्रीय ऊंट अनुसंधान केंद्र भी बना हुआ है,'' मां ने बताया.

''पिंकी, मैं तुझे एक मजेदार बात बताऊं. हम ने वहां कई ऐसे ऊंट देखे जिन के शरीर पर तरहतरह की सुंदर कलाकृतियां बनी हुई थीं, जो कैंची द्वारा उन के बालों की कटिंग कर के बनाई गई थीं,'' ईशा ने अपनी याद ताजा की.

''और मुझे तो ऊंटनी के दूध से बनी आइसक्रीम बहुत ही स्वादिष्ठ लगी. उस का स्वाद तो सब से अलग था,'' मायरा को भी याद आया.

पिंकी को उन सब की बातों में बहुत मजा आ रहा था, इसलिए वह बड़े ध्यान से बातें सुन रही थी.

''इस यात्रा में और क्याक्या हुआ था मां, मुझे बताओ?'' उस ने पूछा.

''ऊंटों को इतनी खूबसूरती से सजाया गया था कि लग रहा था जैसे किसी की बारात जा रही हो. जानवर होने के बावजूद वे बड़े ही अनुशासन के साथ सधे हुए कदमों से चल रहे थे,'' मां ने बताया.

''मां, आप शायद ऊंटों की रेस वाली बात बताना भूल गई हो. हमेशा मस्त चाल से चलने वाले ऊंट उस रेस में कितने तेज दौड़ रहे थे,'' ईशा ने उस दृश्य का वर्णन ऐसे किया, जैसे उस की आंखों के आगे फिल्म चल रही हो.

''उस रेस को देख कर वहां पहुंचे विदेशी पर्यटक भी हैरान रह गए थे. सब उन का वीडियो बना रहे थे,'' मां ने कहा.

''इस के अलावा उस यात्रा में और क्या हुआ था?'' पिंकी ने पूछा.

यह सुन कर मां ने मुसकराते हुए कहा, ‘‘नहीं बेटा, बहुत कुछ था वहां. वहां की पारंपरिक राजस्थानी पोशाकों में सजेधजे लोगों की सुंदरता देखते ही बनती थी. पोशाकों की भी एक प्रतियोगिता हुई थी. इस के अलावा रस्सी खींचने का कंपीटिशन भी था, विदेशी पर्यटकों और हमारे बीच, जिस में हम लोगों की जीत हुई थी.’’

‘‘और खानेपीने के बारे में मां? उस के बारे में तो आप ने मुझे कुछ बताया ही नहीं?’’ पिंकी तो जैसे बीकानेर की गलियों में खो सी गई थी, ऐसा लग रहा था.

‘‘वहां का खाना तो बड़ा स्पैशल था. बाजरे के आटे की रोटी, चूरमा और फलियों की सब्जी का स्वाद अभी तक याद है मुझे. रेतीले टीलों पर बैठ कर खाना खाने का अनुभव कोई कैसे भूल सकता है,’’ मां ने बताया तो पिंकी के साथसाथ ईशा और मायरा के मुंह में भी पानी आ गया.

‘‘पिंकी, मैं तुझे कुछ ऐसी बातें बताऊंगी कि तू सुनेगी तो दंग रह जाएगी. वहां पर हम ने एक अजीब नजारा देखा. धधकते हुए गरम अंगारों के ऊपर कुछ लोगों ने नाचना शुरू किया तो मेरी चीख निकल गई. पता नहीं कैसे उन लोगों के पांव नहीं जले?’’ मां ने अपनी उस रोमांचक यात्रा की घटना को याद करते हुए बताया.

‘‘कुछ भी हो, अगली बार मैं भी जा कर देखूंगी कि ऊंट नाचते कैसे हैं? वैसे आप सब की बातें सुन कर मुझे तो ऐसा लगा जैसे मैं बीकानेर की वर्चुअल सैर कर रही हूं. सचमुच बड़ा मजा आया इस वर्चुअल सैर में,’’ पिंकी के चेहरे की चमक बता रही थी कि उसे कितना मजा आया था. ●

रास्ता बताओ

डोगो ड्रैगन, मौंस्टर और गिली जिराफ लैंड करने के लिए तैयार हैं. सही रनवे पर लैंड करने के लिए रास्ते का पता लगाएं और उन की मदद करें.

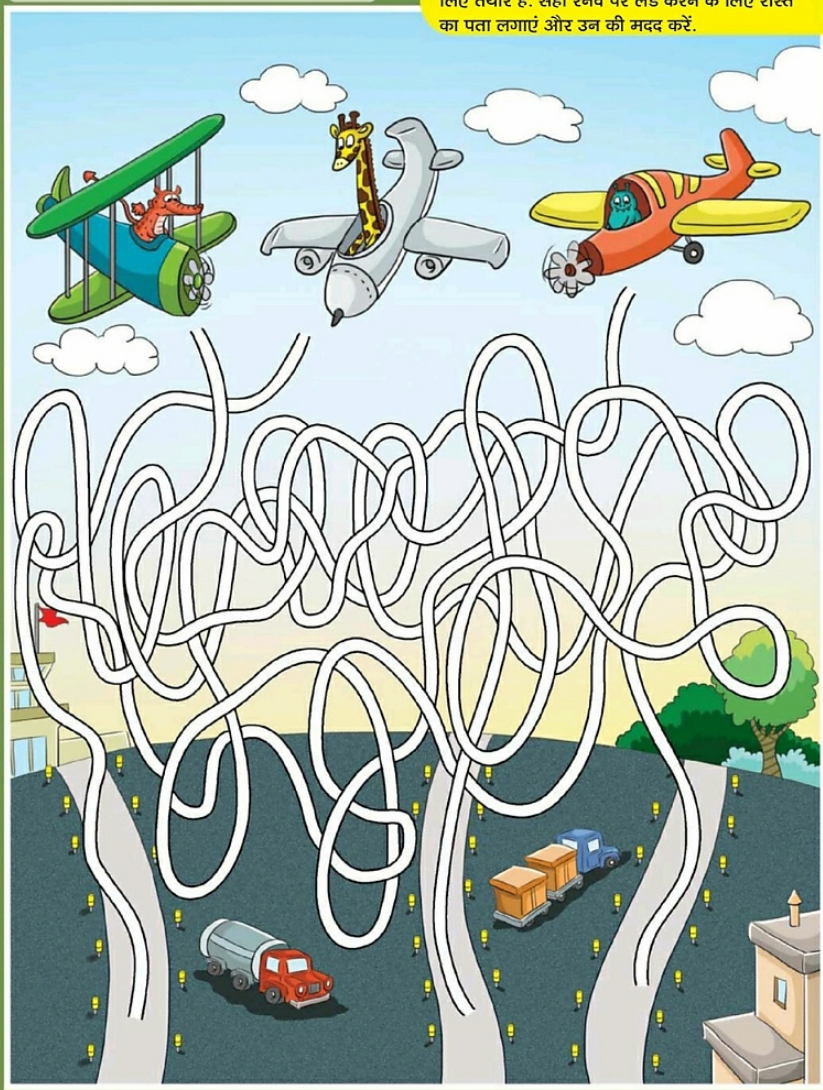

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

बताओ तो जानें

देखें तुम कितना जानते हो

1. अभी मेरा रंग लाल है
   पर कभी हरा भी हो सकता हूं
   पीले रंग का भी होता हूं
   बीमारी दूर भगाता हूं.

2. मेरी एक आंख है
   लेकिन मैं देख नहीं सकती
   मेरे बिना दर्जी का काम न चले
   मेरे सभी भाईबहन बहुत हैं भले.

3. मैं मुलायम और रोएंदार हूं
   सभी के घर के फर्श पर होता हूं
   मेरे जैसा पालतू और कोई नहीं
   विभिन्न रंगों का होता हूं.

4. पक्षी का मैं एक भाग हूं
   जो आसमान में नहीं होती
   समुद्र में तैर सकती हूं
   फिर भी सूखी रहती हूं.

1. गैलीलियो ने किस की खोज की थी?
   (क) टैलीस्कोप विकसित किया
   (ख) एक स्कूल को सुविधाएं उपलब्ध कराईं
   (ग) ज्यामिति की खोज की
   (घ) ऊपर के सभी

2. ओजोन परत किसे रोकता है?
   (क) प्रत्यक्ष यानी दृष्टिगोचर प्रकाश
   (ख) इन्फ्रारेड रेडिएशन
   (ग) एक्स रेंज और गामा रेंज
   (घ) अल्ट्रावायलेट रेडिएशन

3. भारत का सब से बड़ा शहर कौन सा है?
   (क) नई दिल्ली
   (ख) मुंबई
   (ग) कोलकाता
   (घ) चैन्नई

4. इन में से किस के बच्चे को निम्फ कहा जाता है?
   (क) तितली
   (ख) भौंरा
   (ग) कौकरोच
   (घ) हाउसफ्लाइ

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1–सेब, 2–सुई, 3–कारपेट, 4–छाया.
उत्तर (देखें तुम कितना जानते हो?) : 1–क, 2–घ, 3–ख, 4–ग.

अंडरवाटर वौल्केनो बनाएं

हीट यानी ऊष्मा की विशेषताओं को समझें.

मजेदार विज्ञान

आप को चाहिए :

● एक पारदर्शी पानी पीने का गिलास जिस में कमरे के तापमान के अनुसार पानी हो. ● लाल फूड कलर ● बोतल का एक ढक्कन ● रबर बैंड ● एक स्मौल स्टिक.

ऐसा करें :

1. गरम पानी में 4 से 5 बूंद लाल फूड कलर की मिलाएं.

2. रबर बैंड की सहायता से बोतल के ढक्कन के साथ छोटी स्टिक को जोड़ें और एक करछी जैसा बना लें.

3. इस चम्मच को धीरेधीरे गरम पानी में तब तक डालें जब तक कि यह भर न जाए. उस के बाद इसे आराम से ऊपर उठा लें और फिर इसे एक पारदर्शी गिलास जिस में कि कमरे के तापमान का पानी है, उस में डालें.

देखें :

जब आप गिलास में छोटे चम्मच को डालते हैं, तो आप देखेंगे कि लाल रंग का गरम पानी इस से बाहर आता है और ऊपर की ओर बहने लगता है.

सोचें :

लाल गरम पानी ऊपर की ओर क्यों उठता है?

जब लाल गरम पानी ऊपर की ओर उठता है तो यह ऐसा दिखता है जैसे यह अंडरवाटर वौल्केनो यानी पानी के नीचे ज्वालामुखी से लावा का विस्फोट हो रहा हो. यह ऊपर की ओर उठता है क्योंकि इस की डेंसिटी यानी गाढ़ापन कमरे के तापमान वाले पानी की तुलना में कम होता है. डेंसिटी का मतलब है कि एक दिए गए स्थान में किसी वस्तु का द्रव्यमान कितना है. एक वस्तु जिस की डेंसिटी अधिक है, इस का मतलब है कि दिए गए स्थान में उस का द्रव्यमान बहुत अधिक है और किसी वस्तु की डेंसिटी कम है इस का मतलब हुआ कि एक दिए गए स्थान में उस का द्रव्यमान कम है.

जब पानी को गरम किया जाता है, तो इस के अणु तेजी से घूमने लगते हैं. जब ये घूमने लगते हैं तो इन के बीच का स्थान बढ़ जाता है, जिस से इस की डेंसिटी कम हो जाती है. जब इस गरम पानी को कमरे के तापमान वाले पानी में डालते हैं तो यह ऊपर की ओर तैरने लगता है क्योंकि इस की डेंसिटी कमरे के तापमान वाले पानी की तुलना में कम होती है.

पता करें :

बाथरूम का वाटर हीटर कैसे काम करता है?

हमारे इस प्रयोग में जैसा बताया गया है, ठीक उसी तरह हमारे बाथरूम का हीटर काम करता है. एक पाइप ठंडे पानी को वाटर हीटर के तल तक ले जाता है जहां यह गरम किया जाता है. उस के बाद गरम पानी ऊपर की ओर उठ जाता है जहां से इसे दूसरे पाइप द्वारा जो हमारे शौवर या टोटी द्वारा जोड़ा जाता है, चूंकि पानी गरम होता है इसलिए इस की डेंसिटी ठंडे पानी से कम हो जाती है और इसलिए यह ऊपर की ओर उठता है.

घर का चुनाव करें

शालिनी और उस के मम्मीपापा शहर से बाहर नए घर में जाने की योजना बना रहे हैं. सिर्फ वीकैंड को छोड़ कर शालिनी को शहर में हरेक दिन स्कूल जाना पड़ता है. उस की मम्मी सारिका म्यूजिक टीचर हैं और वे भी उसी स्कूल में पढ़ाती हैं जहां शालिनी सप्ताह के 6 दिन जाती है. उस के पापा सुनील की शहर में दुकान है और सप्ताह के सातों दिन वे दुकान पर जाते हैं. उन्हें कौन सा घर चुनना चाहिए ताकि वे कम से कम यात्रा के हरेक सप्ताह अपने गंतव्य तक आजा सकें?

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

पहाड़ों की रानी

कहानी ● कुमुद कुमार

जंपी बंदर को सैरसपाटे का बड़ा शौक था. वह घूमने का कोई भी मौका हाथ से जाने नहीं देता था. गर्मियों का मौसम शुरू होते ही जंपी गर्मियों की छुट्टियों का इंतजार करने लगा. वह जानता था कि हर बार की तरह उस के पापा इस बार भी उसे कहीं न कहीं घुमाने के लिए अवश्य ले जाएंगे.

एक दिन सुबह जंपी ने अपने पापा को मोबाइल पर बात करते हुए सुना, ''हां, मिस्टर रौबी, इस बार 'पहाड़ों की रानी' घूमने का मन है, दिल्ली से देहरादून तक हम ट्रेन से जाएंगे और फिर वहां से 35 किलोमीटर का सफर टैक्सी से पूरा करेंगे. आप मुंबई से कैसे आएंगे, मिस्टर रौबी?''

जंपी मिस्टर रौबी की प्रतिक्रिया नहीं सुन सका, लेकिन उस ने अपने पापा को यह कहते सुना, ''अच्छा, आप हवाई जहाज से आएंगे और देहरादून से 24 किलोमीटर दूर जौली ग्रांट हवाई अड्डे पर उतरेंगे. आप ऐसा करना, वहां से सीधे टैक्सी पकड़ कर 'पहाड़ों की रानी' पहुंच जाना. मैं ने वहां आप के लिए भी होटल में कमरे बुक करा दिए हैं.''

अब जंपी चकराया, 'यह 'पहाड़ों की रानी' कौन सा पर्यटन स्थल है? उस ने तो इस के बारे में पहले कभी नहीं सुना था,' वह सोचने लगा.

जब उस ने देखा कि पापा तो अभी मोबाइल पर व्यस्त हैं, तो वह दौड़ कर मां के पास रसोई में पहुंचा.

''मां, 'पहाड़ों की रानी' कौन सा पर्यटन स्थल है?'' जंपी ने आवेश में पूछा.

''क्यों बेटा? क्या हुआ?'' मां ने पूछा.

''ओह मां, बताओ न जल्दी से, पापा कहते हैं कि इस

बार हम वहीं घूमने जा रहे हैं,'' जंपी ने उत्साह से कहा.

मां खुश होते हुए बोलीं, ''ओह, जंपी, वह तो मेरा पसंदीदा खूबसूरत पर्यटन स्थल मसूरी है. वह उत्तराखंड के देहरादून जिले में है.''

यह सुन कर जंपी खुशी से नाचने लगा.

छुटि्यां शुरू हो गईं और एक दिन सुबह जंपी, उस की बहन डौली और उस के मम्मीपापा ट्रेन द्वारा देहरादून पहुंच गए. फिर वे टैक्सी से मसूरी की ओर चल पड़े. जैसेजैसे वे घुमावदार रास्ते से पहाड़ी पर ऊपर की ओर बढ़ते जा रहे थे, वैसेवैसे पहाड़ों की ठंडी हवा और खूबसूरती उन का स्वागत करती जा रही थी. चीड़ और देवदार के पेड़ लहरालहरा कर उन का स्वागत करते प्रतीत हो रहे थे.

जंपी ने पूछा, ''पापा, मसूरी के इतिहास के बारे कुछ में बताइए न?''

''जंपी, तुम ने बहुत अच्छी बात पूछी. मसूरी का इतिहास 1825 से शुरू होता है, जब एक ब्रिटिश सेना अधिकारी कैप्टन यंग और देहरादून निवासी शोर ने इस की खोज की. यहां 'मंसूर' नाम का पौधा बहुतायत में मिलता था, इसलिए इस का नाम 'मंसूरी' पड़ गया. बाद में इसे मसूरी' कहा जाने लगा.''

इस तरह मसूरी के बारे में बातें करते हुए वे अपने होटल पहुंच गए. वहां पहले से ही उन के पुराने मित्र मोनू खरगोश और उस की बहन मीनू उन का इंतजार कर रहे थे. वे अपने मम्मीपापा मिसेज और मिस्टर रौबी के साथ पहले ही होटल पहुंच चुके थे. एकदूसरे से मिल कर वे बड़े खुश हुए.

तभी जंपी के पापा ने कहा, ''बच्चो, जल्दी तैयार हो जाओ. मुझे पता है कि तुम यात्रा से थके हुए हो, लेकिन मैं तुम्हें एक ऐसी जगह ले कर जाऊंगा, जहां पहुंच कर तुम बिलकुल तरोताजा महसूस करोगे.''

बच्चों को और क्या चाहिए था? वे तो आए ही घूमने के लिए थे. वे तुरंत तैयार हो गए.

उन्होंने दोनों परिवारों के लिए एक बड़ी एसयूवी कार किराए पर ली, जिस में दोनों परिवार आराम से सफर कर सकें.

''पापा, यह तो बताइए कि हम जा कहां रहे हैं?'' डौली ने कार में बैठते ही पूछा.

''डौली, हम कैंपटीफौल जा रहे हैं. यह मसूरी से यमनोत्री मार्ग पर 15 किलोमीटर दूर है. वहां आप लोगों को झरने के ठंडे पानी में नहाने में खूब मजा आएगा,'' पापा ने उन्हें बताया.

बच्चे तो झरने का नाम सुनते ही खुश हो गए. उन्हें तो मस्ती करने का एक अच्छा मौका मिल रहा था.

कैंपटीफौल का नजारा देखते ही बच्चे खुशी से झूम उठे. काफी ऊपर से एक झरने का पानी नीचे गिर रहा था. उस की फुहारों से सारा वातावरण शीतल हो रहा था. जंपी, डौली, मोनू और मीनू तो तुरंत ही

झरने के नीचे नहाने के लिए आतुर हो उठे.

तभी जंपी के पापा ने सुझाव दिया, ''बच्चो, इतना उतावलापन मत दिखाओ. पहले लौकर रुम में जा कर स्विमिंग सूट बदलो.''

सभी जल्दीजल्दी कपड़े बदल कर झरने की ओर चल पड़े, लेकिन मीनू और डौली पानी में जाने से डर रही थीं. तभी जंपी पानी में छलांग लगा कर नाचते हुए उन को चिढ़ाते हुए गाने लगा, ''ठंडेठंडे पानी में नहाना चाहिए, गाना आए या न आए गाना चाहिए.''

तब जंपी के पापा डौली और मीनू की हिम्मत बढ़ाते हुए बोले, ''डौली और मीनू, उत्तराखंड सरकार के पर्यटन विभाग ने झरने के नीचे जो अर्द्ध चंद्राकार कुंड बनाया है, उसे पर्यटकों की सुविधा को देख कर ही बनाया गया है. यह इतना गहरा नहीं कि कोई इस में डूब जाए,'' यह कह कर वे डौली और मीनू का हाथ पकड़ कर झरने के नीचे कुंड में उतर गए. एक बार तो डौली और मीनू को डर लगा, लेकिन पानी में उतरते ही उन का डर छूमंतर हो गया.

फिर तो सारे बच्चे पानी में खूब मस्ती करने लगे. वे एकदूसरे के ऊपर पानी डालने लगे. पानी में डुबकियां लगाने लगे व एकदूसरे का हाथ पकड़ कर झरने के ठीक नीचे जाने लगे. जंपी और मोनू तो पानी में पैर छपछपा कर तैरने की कोशिश भी करने लगे. वे पानी के नीचे सांस रोक कर अंदर जाते और दूसरी तरफ जा कर बाहर निकलते. डौली और मीनू उन की नकल करती.

झरने का पानी ठंडा और बिलकुल साफ था. उस ठंडे पानी में नहाने से सब को गरमी से बड़ी राहत मिली और सब तरोताजा हो गए. तब जंपी के पापा सब को एक चाय के स्टौल पर ले गए. उन्होंने कहा, ''बच्चो, पता है, मैं आप को यहां चाय पिलाने क्यों लाया हूं?''

''क्यों अंकल?'' मीनू ने चाय की चुसकी लेते हुए कहा.

''क्योंकि इस स्थान का चाय से अनूठा नाता है. अंग्रेज लोग यहां कैंप लगा कर टी यानी चाय पिया करते थे. इसी वजह से इस स्थान का नाम कैंप और टी मिला कर कैंपटीफौल पड़ा.''

''अरे वाह, अंकल, आप ने तो हमें बड़े गजब की बात बताई. इस का तो हमें पता ही नहीं था,'' मीनू ने चाय के प्याले में बिस्कुट डुबोते हुए कहा.

कैंपटीफौल से कार में बैठ कर वे होटल की ओर चल पड़े. इस बार मोनू ने पूछा, ''अंकल, अब हम घूमने कहां जाएंगे?''

''मोनू, मसूरी और इस के आसपास घूमने की बहुत सी जगह हैं, लेकिन अब खाना खाने और आराम करने के बाद हम 'गन हिल' घूमने जाएंगे.''

खाना खाने और कुछ देर आराम करने के बाद सब गन हिल के लिए निकल पड़े. उन का 400 मीटर का रोपवे का सफर रोमांच से भरा था. जैसेजैसे उन की ट्रौली ऊपर की ओर बढ़ती जा रही थी, वहां से हिमालय पर्वत का सुंदर नजारा दिखाई पड़ रहा था. मसूरी और दून घाटी के सुंदर दृश्यों को उन्होंने अपने कैमरों में कैद कर लिया.

''गन हिल, पापा?'' डौली ने अचरज से पूछा.

''हां, डौली, यह मसूरी की दूसरी सब से ऊंची चोटी है.''

''तो अंकल, पहली ऊंची चोटी कौन सी है?'' मीनू ने पूछा.

''इसे चिल्ड्रन लौज कहा जाता है. यहां घोड़े की सवारी कर के या फिर पैदल भी जाया जा सकता है. वहां से बर्फ से ढके पहाड़ों के सुंदर दृश्य दिखाई पड़ते हैं, जो मनमोह लेते हैं,'' जंपी के पापा ने उन्हें बताया.

''लेकिन पापा, आप ने हमें यह तो बताया ही नहीं कि इसे 'गन हिल' क्यों कहते हैं?'' डौली ने पूछा.

उन्होंने कहा, ''डौली, आजादी से पहले उस पहाड़ी पर रखी तोप से दोपहर को गोला दागा जाता था. उस गोले की आवाज को सुन कर लोग अपनी घड़ियां सेट करते थे. इसी से इस का नाम 'गन हिल' पड़ गया.''

''वाह पापा, फिर तो मैं उस पहाड़ी को देखने जरूर जाऊंगी,'' डौली ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा.

वहां से वापस आ कर होटल के लौज में बैठ कर वे चाय का आनंद लेने लगे और आगे के कार्यक्रम की चर्चा करने लगे.

जंपी के पापा ने उन्हें बताया कि कल हम सुंदर म्युनिसिपल गार्डन और कैमल बैक रोड देखने जाएंगे, जो यहां के दर्शनीय स्थल हैं. उस के बाद झड़ी पानी प्रपात, भट्टा प्रपात, माल रोड और अनेक धार्मिक स्थल भी देखने और घूमने योग्य हैं.

''पापा, और क्या खास है मसूरी में?'' जंपी ने पूछा.

''जंपी, मसूरी में भारतीय प्रशासनिक सेवा का एकमात्र प्रशिक्षण केंद्र, 'लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी' और भारततिब्बत सीमा पुलिस का क्षेत्रीय कार्यालय एवं प्रशिक्षण केंद्र भी है. यहां अनेक बड़े प्रसिद्ध बोर्डिंग स्कूल भी हैं, जिन में देशविदेश के अनेक छात्रछात्राएं शिक्षा प्राप्त करते हैं.''

इन बातों से बच्चे समझ गए कि मसूरी को 'पहाड़ों की रानी' यों ही नहीं कहते. वे खुश थे कि इस शानदार पर्यटन स्थल पर वे कुछ दिन और ठहरेंगे. ●

गंतव्य स्थान बताएं

सपना, सुशांत, जैनी और फराह भारत के अलगअलग गंतव्यों की ओर हवाई यात्रा पर जा रहे हैं. नीचे संकेतों को पढ़ें और पता करें कि हर कोई किस गंतव्य स्थान की यात्रा कर रहा हैं.

- उत्तर भारत के पर्वतीय क्षेत्र की ओर जैनी उड़ान भर रही है.

- जैनी जिस दिशा में गई है उसी ओर सपना ने भी फ्लाइट पकड़ी है. वह गोल्डन टैंपल को देखने जा रही है.

- सुशांत गुजरात से है. वह गुजरात के दक्षिणी पड़ोसी राज्य की सैर पर गया है.

- फराह ओडिशा से है और वह समुद्रतट के दूसरे भाग की ओर भारत के सब से छोटे राज्य में घूमने गई है.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

चीकू

चित्रकथा : दास

मीकू, तुम क्या कर रहे हो?

मैं डार्ट (छोटा तीर) फेंक रहा हूं. सिर्फ अभ्यास के लिए ऐसा कर रहा हूं.

तुम हमेशा कुछ न कुछ शरारतें करते रहते हो. कहीं जाना मत, मैं तुरंत लौटूंगा.

जब चीकू चला गया तो एक बिल्ली आ गई.
इस चूहे की हिम्मत तो देखो, यह कैसे मेरी तसवीर पर तीर फेंक रहा है?

बिल्ली ने चूहे को पकड़ लिया और एक पेड़ से बांध दिया.
अब मैं तुम पर तीर फेंकने जा रही हूं.

लेकिन अगर तीर मुझे लगा तो मैं घायल हो जाऊंगा.

उफ्फ, मैं एक भी तीर टारगेट पर नहीं मार सकी, मुझे ध्यान से मारना चाहिए.

चीकू बैग में अमरूद ले कर लौट आया.
यह क्या होने जा रहा है? यह बिल्ली तो मीकू पर छेद ही छेद कर रही है.

चीकू ने बिल्ली के ऊपर एक अमरूद फेंका.
मेरे पास इस बिल्ली पर हमला करने के अलावा कोई रास्ता नहीं है.

आउच, किसी चीज ने मुझे चोट पहुंचाई.
चीकू ने तुरंत मीकू को खोल दिया.
अब हमें इस रस्सी से बिल्ली को बांध देना चाहिए.
सचमुच असली बिल्ली पर निशाना लगाना बहुत ही मजेदार रहेगा, जो तसवीर पर लगाने में नहीं था.
ये सब क्या हो रहा है? मुझे किस ने बांधा.
हम ने बांधा. अब मैं इस डार्ट गेम यानी तीर फेंकने के खेल में अपनी किस्मत आजमाने की कोशिश करने जा रहा हूं.
तुम्हारी इतनी हिम्मत, ऐसा मत करना. तसवीर पर तुम अपनी किस्मत आजमाओ, यही बेहतर रहेगा.
लेकिन तुम तो मीकू पर तीर फेंक रही थी. तुम तो उसे मार न सकी, बस.
मोती कुत्ता पेड़ के पीछे था. चीकू ने तीर फेंका, तो वह उसे जा कर लगा.
आउच, मुझे किस ने मारा?
चीकू, बढ़िया रहेगा, भाग लो.
चीकू ने अमरूद का बैग वहीं छोड़ दिया और भाग गया.
वाउ, किसी ने ये अमरूद यहां छोड़ दिए हैं. इन्हें खाने का मैं मजा लूंगा.

अंतरिक्ष की सैर

कहानी ● नीलम राकेश

‘‘चिका कहां है? मुझे वह दिखाई नहीं दे रही,’’ दादाजी ने चिका को ढूंढ़ते हुए कहा. वे अपनी पोती से बहुत प्यार करते थे.

उस की मां ने कहा, ‘‘वह अंदर सो कर अपनी छुट्टी का मजा ले रही है. मैं उसे जगाती हूं,’’ वे चिका के कमरे में गईं और मुसकराईं. कमरा अस्तव्यस्त था और चिका गहरी नींद में सो रही थी. उन्होंने उस के सिर को प्यार से छुआ और बिस्तर पर बैठ गईं.

‘‘चिका, चिका, उठो, तुम कितना सोओगी? माना कि आज रविवार है, पर अब उठो,’’ मां ने चिका को हिलाते हुए कहा.

हड़बड़ा कर चिका उठ बैठी.

‘‘मां... मैं...’’ उस ने आंखें मलते हुए कहा.

‘‘क्या मैंमें कर रही हो? उठो, अब उठने का समय हो गया है,’’ मां मुसकरा कर बोलीं.

‘‘मां, मैं यहां हूं,’’ चिका ने हैरान हो कर कहा.

‘‘तुम और कहां होंगी, क्या तुम अब भी सो रही हो? उठो चलो,’’ उस की मां ने कहा.

‘‘नहीं मां, मेरी बात सुनो,’’ चिका ने दोबारा आंखें मूंदते हुए कहा.

''यह क्या है?'' मां ने बगल में बैठ कर पूछा.

''मैं सोई कहां थी? मैं तो अंतरिक्ष की सैर पर गई थी,'' चिका बोली.

''क्या? कहां गई थी?'' मां ने हैरान हो कर कहा.

''अंतरिक्ष की सैर पर गई थी. बहुत मजा आया,'' चिका फिर से बोली.

''अंतरिक्ष की सैर?''

''हां मां, रात में लाइका आई थी और उस ने मुझ से पूछा कि चिका क्या तुम अंतरिक्ष की सैर करना चाहती हो? बस, मैं झट से उस के साथ चल दी,'' उत्साह से चिका बोली.

''वह कौन है?'' मां ने चौंक कर पूछा.

''अरे, तुम लाइका को नहीं जानती? हमारी टीचर ने कल ही हमें बताया था कि वह पहला कुत्ता था, जिसे रूस ने स्पूतनिक-2 नाम के अंतरिक्ष यान में बैठा कर अंतरिक्ष में भेजा था.''

''ठीक है, ठीक है, अब उठो.''

''लेकिन सुनो मां.''

''हां, बता,'' मां मुसकराईं. वे चिका की कहानी का आनंद लेने लगीं.

''मैं लाइका की पीठ पर बैठ कर अंतरिक्ष की यात्रा पर निकल गई. लाइका प्यारा कुत्ता है.''

''ठीक है, मुझे यह सुन कर खुशी हुई.''

''ऊपर से मैं ने नीचे देखा कि पृथ्वी कैसी दिखती है. सबकुछ इतना छोटा लग रहा था, जैसे छोटे खिलौनों के घर और छोटे पेड़ हों. जब हम ऊपर गए तो सबकुछ धुंधला हो गया. मकान तो सब जैसे गायब ही हो गए थे और हां, पृथ्वी पर चांदी की लकीर जैसी नदी दिख रही थी.''

''अच्छा, तुझे डर नहीं लगा इतने ऊपर पहुंच कर?'' मां ने पूछा.

सिर हिलाता हुआ चिका बोली, ''नहीं मां, ऊंचाई से तो डर नहीं लगा, पर जब हम लोग धरती की कक्षा से बाहर निकले तब बहुत डर लगा था मुझे. मैं तो मम्मीमम्मी चिल्लाने लगी थी.''

''अरे, ऐसा क्या हुआ कि मेरी बहादुर बच्ची डर गई?'' मां ने प्यार से पूछा.

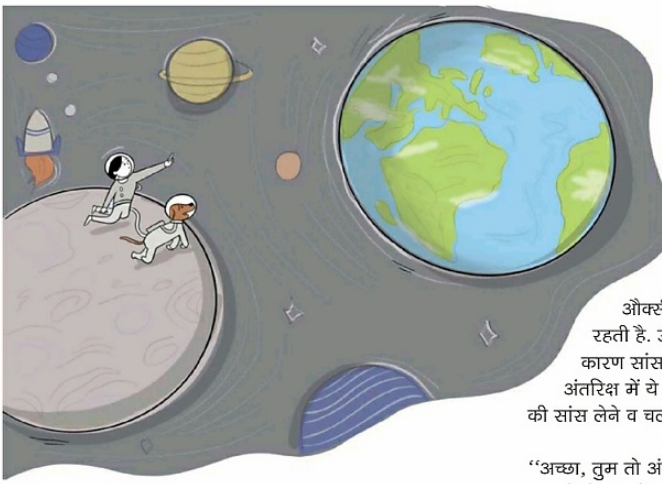

''वहां जैसे ही हम लोग धरती की सीमा से बाहर निकले, अचानक मैं उड़ने लगी.''

''मतलब?'' हैरान हो कर मां की आंखें फैल गईं.

''मतलब, मैं लाइका की पीठ पर से जैसे उड़ गई और हवा में तैरने लगी. बिलकुल उलटापुलटा हो कर. मुझे बहुत डर लग रहा था.''

''फिर?'' मां ने पूछा.

''मैं तो डर ही गई थी, इसलिए मम्मीमम्मी चिल्ला रही थी, पर लाइका बहुत समझदार निकली. वह तैरती हुई सी मेरे पास आई और ठीक मेरे नीचे आ कर बोली, चिका मेरी बगल में जो बेल्ट लटक रही है, उस से खुद को मेरे शरीर से बांध लो.''

''ओह, अच्छा फिर?''

''अरे, फिर क्या. जैसे ही मैं ने खुद को लाइका की पीठ पर बांधा, मुझे भी उस के अंतरिक्ष सूट यानी स्पेस सूट का लाभ मिलने लगा. मैं तो हैरान रह गई.''

''स्पेस सूट? स्पेस सूट क्या होता है चिका?'' उस की मां ने पूछा.

''अरे, अंतरिक्ष में हम इन साधारण कपड़ों में नहीं जा सकते. हमें इन के ऊपर से एक विशेष सूट पहनना पड़ता है जो स्पेस सूट कहलाता है. यह सूट विशेष पदार्थ से बनाया जाता है और इस में औक्सीजन सप्लाई करने की व्यवस्था रहती है. ऊपर औक्सीजन की कमी के कारण सांस लेना मुश्किल हो जाता है. अंतरिक्ष में ये स्पेस सूट ही अंतरिक्ष यात्रियों की सांस लेने व चलने में मदद करता है.''

''अच्छा, तुम तो अंतरिक्ष के बारे में बहुत कुछ जानती हो. पर ये बताओ, तुम उड़ने क्यों लगी थी?

''मां, स्कूल में गुरुत्वाकर्षण का चैप्टर अभी हाल ही में पढ़ाया गया. अंतरिक्ष में हमारी पृथ्वी का जो गुरुत्वाकर्षण बल है उस का प्रभाव समाप्त हो जाता है. इस कारण हम भारहीन हो जाते हैं और हलके हो कर तैरने लगते हैं. उस समय तो डर लगा था, पर अब सोच कर भी अच्छा लग रहा है कि मैं हवा में तैर रही थी.''

''मुझे भूख लगी तो लाइका ने कुछ पीने के लिए दिया, क्योंकि अंतरिक्ष में कुछ भी ठोस नहीं खाया जाता. हमारे जो अंतरिक्ष यात्री वहां जाते हैं, लाइका बता रही थी, वे भोजन तरल रूप में ही लेते हैं, क्योंकि अगर ठोस कोई टुकड़ा खाते हुए गिर जाए तो वह वहां तैरने लगेगा और अंतरिक्ष यात्रियों की आंखों को नुकसान पहुंचा सकता है और वहां कोई बैठ कर नहीं खाता. सब तैरतेतैरते खुद को सीधा रख कर खाते हैं.''

''अच्छा.''

''एक मजेदार बात बताऊं?''

''हां, हां, बताओ न चिका, मुझे बहुत मजा आ रहा है.''

''जब मैं स्वादिष्ठ पेय पी रही थी तो थोड़ा सा मुझ से गिर गया और वह एक बड़ी बूंद बन गई और तैरने लगी. लाइका मुझे उस बूंद के पास ले गई और मैं ने उसे निगल लिया,'' कह कर चिका हंसने लगी. उस की मां भी उस के साथ हंसने लगीं.

''हां, सच में. अरे, एक बात तो बताई ही नहीं, अंतरिक्ष से अपनी पृथ्वी नीली दिखाई देती है.''

''नीली?''

''हां मां, और फिर लाइका मुझे चांद पर ले गई. वहां उस ने मुझे उन अंतरिक्ष यात्रियों के पैरों के निशान भी दिखाए, जो पहले वहां गए थे, उन के निशान आज भी हैं.''

''ऐसा कैसे संभव हो सकता है चिका? इतने सालों में तो उस पर धूल जम कर वे सब छिप गए होंगे?'' मां ने कहा.

''नहीं मां, वहां वायुमंडल नहीं है, न तो कोई हवा, पानी, बारिश ही वहां है. इसलिए वहां कोई धूल नहीं उड़ती, जो जैसा है वैसा ही बना रहता है,'' चिका ने समझाया.

''हूं, अच्छा. तू तो बहुत कुछ जानती है.''

''एक बात तो बताना भूल ही गई.''

''वह क्या?'' मां ने पूछा.

''लाइका ने मुझे वहां से धरती पर एक दीवार दिखाई और बताया कि यह चीन की दीवार है.''

''हां, यह चीन की दीवार विश्व की सब से बड़ी दीवार है और यह दुनिया के सात अजूबों में से एक है,'' मां ने कहा.

''हां मां, वह हमें दिखाई दे रही थी पर अब वह धुंधली हो गई थी. लाइका बता रही थी कि पहले यह बहुत साफ दिखाई देती थी, लेकिन धरती पर बढ़ते प्रदूषण के कारण अब धुंधली दिख रही थी. लाइका ने मुझ से वादा किया कि मैं पृथ्वी पर वापस पहुंच कर अपने सब दोस्तों से एकएक पेड़ लगाने का अनुरोध करूंगी और पर्यावरण की रक्षा के लिए हम कुछ भी कर सकते हैं. मुझे अपना वादा निभाना है मां, मैं कल स्कूल जा कर अपने दोस्तों से बात करूंगी,'' चिका ने निश्चयपूर्वक कहा.

''हां, जरूर करना. मैं भी तुम्हारे इस काम में तुम्हारा साथ दूंगी. चलो, कल हम दोनों सामने वाले पार्क में दो पौधे लगाते हैं,'' उस की मां ने कहा.

''नहीं मां, कल मेरा स्कूल है. आज रविवार है. मैं पौधा आज ही लगाऊंगी. क्या आप मुझे नीम का पौधा दिला सकती हो?'' चिका बोली.

''ठीक है, नाश्ता कर के तैयार हो जाओ. फिर हम नर्सरी जाएंगे,'' मां बोलीं.

''धन्यवाद मां, मैं आज बहुत खुश हूं.''

कमरे से बाहर निकलते समय चिका की मां ने कहा, ''तुम्हारे सपने की कहानी ने मुझे भी अंतरिक्ष की सैर करवा दी, धन्यवाद.''

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं और चित्र पूरा करें.

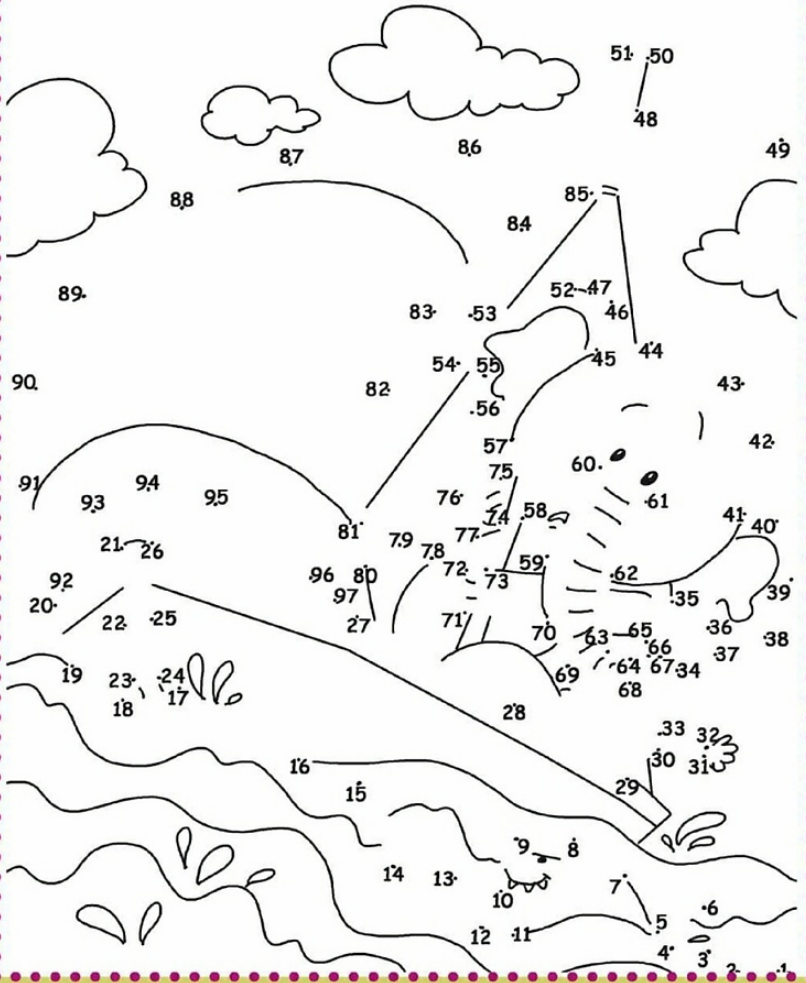

ब्लू माउंटेन

कहानी ● हरवंस सिंह

हर बार जब हम ब्लू माउंटेन आस्ट्रेलिया की यात्रा को याद करते हैं तो हमें काफी आनंद आता है और बदन में डर से सिहरन सी दौड़ जाती है. उस शाम कुछ भी अनहोनी हो सकती थी.

मेरा नाम दीया और मेरे भाई का नाम आदी है. हम आस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वैल्स शहर सिडनी में रहते हैं. हमारे मातापिता एनआरआई हैं. हम दोनों बहनभाइयों का जन्म आस्ट्रेलिया में ही हुआ है. मैं 5वीं में और मेरा भाई 7वीं कक्षा में पढ़ता है.

हम आस्ट्रेलिया काफी घूम चुके थे, पर हमें ब्लू माउंटेन, सिडनी जाने का मौका अभी तक नहीं मिल पाया था. देशविदेश के पर्यटकों में यह जगह काफी लोकप्रिय है. आप को हमेशा वहां रौनक नजर आएगी. वहां की सरकार ने इस

पर्यटन स्थल के विकास के लिए मन लगा कर मेहनत की है और भरपूर खर्च किया है.

हमारा टूर दिसंबर 2018 में लगा था. तब तक कोरोना महामारी का कोई नाम भी नहीं जानता था. इसलिए रविवार को हम कार से ब्लू माउंटेन की प्राकृतिक सुंदरता देखने पहुंच गए.

रास्ते में हम पिज्जा और कौफी पीने के लिए रुके.

प्रवेश करते ही जहां हम पहुंचे वह ब्लू माउंटेन का मनोहर आनंद लेने के लिए विकसित किया हुआ प्लेटफार्म है. यहां से कुछ दूरी पर 3 आपस में जुड़ी पहाड़ियां नजर आती हैं, जिन्हें उन के आकार के कारण थ्री सिस्टर्स कहा जाता है. यद्यपि इन प्राकृतिक चट्टानों पर किसी मूर्तिकार का हथौड़ा नहीं चला है.

नीचे दूरदूर तक घने जंगल फैले हैं, जिन पर नीले रंग के धुंए के बादल अकसर छाए रहते

हैं. यहीं से पर्यटक 3 बहनों को अपने कैमरे या मोबाइल में कैद करते हैं.

बाद में हम दर्शनीय स्काइवे में एक केबल कार में पहुंचे, जो मोटेमोटे तारों पर लटकी आसमान में चलती है. नीचे मनोहारी अनगिनत झरनों का दृश्य भी हम ऊपर से देख पाते हैं. कोईकोई झरना ऊपर से ऐसा लगता है, जैसे की प्लेट से नीचे दूसरी प्लेट में पानी गिर रहा हो.

आप की यात्रा अधूरी रह जाती है यदि आप उस ट्रेन में नहीं बैठते जो आप को नीचे कई मीटर तक गहरी खाई में ले जाती है. ट्रेन में सुरक्षा के लिए सीट बेल्ट और हैंडल होते हैं. जब यात्री बैठते हैं तो ऊपर से छत खुल कर बंद हो जाती है. पारदर्शी गाड़ी से जंगल के बीच से होते हुए हम नीचे जाते हैं. फिर वहां थोड़ा रुक कर वापस आते हैं.

यह पूरा सफर इतना रोमांटिक होता है कि सब शोर करते हुए आनंद मनाते हैं. कहते हैं पहले यहां नीचे कोयले की खान हुआ करती थी और ट्रेन से ही कोयला बाहर निकाला जाता था. अब इस को पर्यटन स्थल बनाया गया है.

इस दर्शनीय स्थल से लौटने के बाद हम चारों एक झरने पर नहाने के लिए चले गए. पर्यटक यहां नहाने का आनंद ले रहे थे.

आने वाला समय हमें मुसीबत में डालने वाला था. घाटी के किनारे जंगल में पगडंडी वाला रास्ता था, वह नीचे कुछ ज्यादा ही ढलान पर था. कई पर्यटक इस का आनंद ले रहे थे.

हम दोनों बहनभाई बिना जाने कि हमारे मातापिता कहां तक पहुंच गए हैं, तेजी से नीचे उतरते गए. आगेपीछे देखा ही नहीं. हमें यह भी ध्यान नहीं रहा कि पीछे एक चौराहे पर मोड़ आया और हम अलगअलग हो गए तथा जंगल की सुंदर घाटी में खो गए.

जब हम ने एक बार पीछे मुड़ कर देखा तो मम्मीपापा में से कोई नजर नहीं आया. शाम होने वाली थी. घने जंगल में सूरज की रोशनी देर तक नहीं रहती. हमारा मोबाइल नैटवर्क इतने घने जंगल में काम नहीं कर रहा था. कहींकहीं पगडंडी पर पानी बह रहा था. एकदो मोटेमोटे चूहे जैसे जानवर हमारे पैरों के पास

सुरागों के आधार पर वे हमें ढूंढ़ पाए थे.

मम्मी थक कर पीछे एक जगह बैठ कर हमारा इंतजार कर रही थीं कि अगर हम लौटेंगे तो उन की नजर हम पर पड़ जाएगी और वे हमें खोज लेंगी.

हम सब मानसिक व शारीरिक रूप से पूरी तरह थक चुके थे. पास ही हमें बाउंड्री वौल से लगी लंबीलंबी लोहे की सीढ़ियां नजर आईं, जो हमें बाहर सड़क पर पहुंचा सकती थीं.

हम बाहर आ कर अपनी कार में बैठे और घर की ओर चल पड़े. थोड़ी देर में ही मेरा भाई ब्लू माउंटेन की वीडियो देखने में बिजी हो गया. हम सब घर पहुंचते ही थकावट से चूर होने से जल्दी सो गए. ●

से हो कर गुजर गए. हमें डर लगा, कहीं कोई सांप बाहर न आ जाए. उस क्षण घने जंगल में दूरदूर तक कहीं कोई हमारी आवाज सुनने वाला नहीं था.

हालांकि हम बहुत ही घबरा गए थे लेकिन तब हमारी सांस में सांस आई जब पापा दूर से हमारी ओर आगे बढ़ते हुए नजर आए. घबराहट के कारण मैं तो उन से लिपट कर रोने लगी. हम ने सचमुच बहुत बड़ी गलती की थी.

पापा रास्ते में पगडंडी पर दूसरी तरफ से आते सभी पर्यटकों से वह पूछ रहे थे कि क्या उन्होंने एक लड़का और लड़की को साथसाथ इधर से जाते हुए देखा है? इन्हीं

जब समीर ने छेड़ी कैसियो पर धुन

जब समीर के पापा औफिस से घर आए तो उन का मूड समीर को देख कर खराब हो गया. समीर अपने मोबाइल में व्यस्त था जबकि उस की छोटी बहन आशी किताब पढ़ रही थी. पापा रोज समीर को मोबाइल में व्यस्त पाते थे और उन का मूड खराब हो जाता था.

मम्मी कहतीं, ''क्या करोगे, बच्चे हैं, स्कूल का वर्क औनलाइन करतेकरते थक जाते होंगे. साल भर से आखिर घर पर ही तो रह रहे हैं, बच्चे. थोड़ा खेल लेते हैं तो क्या दिक्कत है, आखिर मोबाइल ही तो इन के मनोरंजन का सहारा है.''

मम्मी की बात सुन कर पापा भी खामोश हो जाते. सोचते कि ठीक ही तो कह रही हैं. जब महामारी नहीं फैली थी तब छुट्टियों में रिश्तेदारों के बच्चे भी घूमनेफिरने आ जाते थे, फिर इन बच्चों की खुशियां बढ़ जाती थीं लेकिन अब सिर्फ औनलाइन क्लास कर के घर में पड़ेपड़े ये बच्चे आखिर अपनी बोरियत कैसे दूर करें. चलो, जरा खेल लेते हैं तो क्या हर्ज है. पापा यह सोच कर फिर समीर से कुछ नहीं कहते और उसे प्यार से बुला कर गले लगा लेते.

एक दिन पापा ने कहा, ''बच्चो, हम इस बार घर के बगीचे में ही पिकनिक डे मनाएंगे. कोरोना वायरस के कारण बाहर तो जा नहीं सकते, लेकिन घर में ही पिकनिक तो मना ही सकते हैं.''

फिर क्या था बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा. पिकनिक डे वाले दिन समीर और आशी के दोस्त भी उन के यहां आ गए. आनंद अंकल भी थे जो कैसियो कंपनी में डायरेक्टर थे. उन के बच्चे भी पिकनिक डे के दिन बगीचे में आ गए.

आनंद अंकल अपने साथ बच्चों को गिफ्ट करने के लिए कुछ कैसियो मिनी लेते आए थे.

सभी ने बगीचे में बड़े हर्षोल्लास के साथ पिकनिक मनाया. अंत में आनंद अंकल ने जब कैसियो मिनी कुछ बच्चों को गिफ्ट किया तो समीर की तो खुशी का ठिकाना ही न रहा. उस ने अचानक जब कैसियो बजाना शुरू किया तो पापामम्मी के साथसाथ आनंद अंकल भी दंग रह गए. पर दादीमां मुसकरा रही थीं. दादीमां से मुसकराने का कारण पूछा तो उस ने बताया कि समीर औनलाइन क्लासेज पूरा करने के बाद औनलाइन ही कैसियो बजाना सीखता था, जबकि पापा औफिस से आते तो उसे देख कर सोचते थे कि वह खेल रहा है. दादीमां के साथ अब मम्मी भी मुसकराने लगीं. अब गूंजते कैसियो की धुन पर सभी बच्चे नाचने और झूमने लगे थे. पिकनिक का आनंद अब दोगुना हो गया था. ●

फन डाइ

पूजा नंदनवार

स्मार्ट

20 जून को फादर्स डे है. अपने पापा को गिफ्ट देने के लिए एक फन डाइ बनाएं और एकसाथ खेलें.

आप को चाहिए : 6 रंगीन वर्गाकार पेपर, सफेद पेपर, कैंची, मार्कर और ग्लू.

ऐसे बनाएं :

1. स्क्वेयर यानी वर्ग को आधा से मोड़ दें ताकि केंद्र दिखाई दे. उस के बाद केंद्र की रेखा यानी लाइन की ओर किनारे के भाग को मोड़ें, जैसा चित्र में है.

2. जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, एक किनारे को मोड़ दें.

3. विपरीत दिशा में दूसरे किनारे को मोड़ दें.

4. अंदर की ओर फिर से दो फ्लैप्स मोड़ दें.

5. अब नुकीले कौर्नर को किनारे की ओर मोड़ें जैसा कि दिखाया गया है.

6. इस तरह से मोड़ कर 6 भाग बना लें.

7. अब बगल वाली पौकेट में हरेक भाग के कौर्नर डाल दें.

8. हरेक ढीले छोर को सुनिश्चित कर लें कि वे पौकेट में डाले गए हैं कि नहीं.

9. उन्हें सही ढंग से सुरक्षित रखें ताकि एक डाइ आप को प्राप्त हो सके.

अब आप का गिफ्ट तैयार है.
इसी तरह बहुत सी डाइ बना लें.

10. सफेद पेपर को छोटे वर्गाकार काट लें और इन पर कुछ ऐक्टिविटी लिख लें, जो आप अपने पापा के साथ खेलना चाहते हो.

11. उन्हें डाइ के 6 भागों पर चिपका दें. अगर आप चाहते हैं तो इन्हें सजा लें.

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि
writetochampak@delhipress.in या एक फोटो खींच कर +91 8657402248 पर भेज दें.

अनूठा अनाथालय

कहानी ● प्रमीला गुप्ता

''पीलू भैया, पीलू भैया.''

''हां, क्या बात है, नीलू?''

''आज इतिहास पढ़ाते समय भालू टीचर ने बताया कि श्रीलंका में बेसहारा और बीमार हाथियों के लिए बहुत बड़ा अनाथालय है,'' नीलू ने हैरान हो कर कहा.

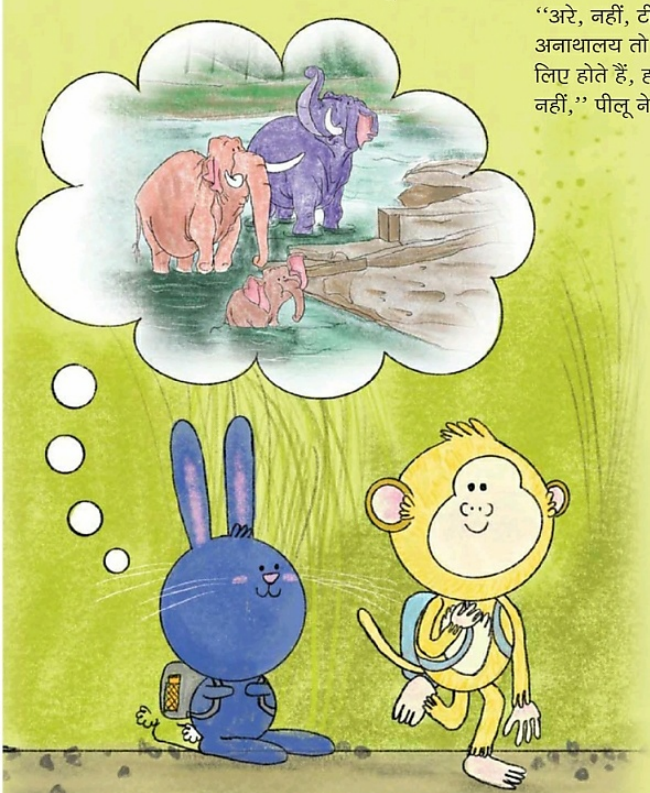

''अरे, नहीं, टीचर मजाक कर रहे होंगे. अनाथालय तो बेसहारा और छोटे बच्चों के लिए होते हैं, हाथी जैसे बड़े जानवरों के लिए नहीं,'' पीलू ने नीलू को समझाया.

''नहीं पीलू भैया, सर ने हमें अनाथालय का नाम भी बताया. वह कह रहे थे कि श्रीलंका के दूसरे बड़े शहर कैंडी में 'महा ओया' नदी के किनारे यह अनाथालय बना हुआ है.''

पीलू बंदर नीलू खरगोश की बात सुन कर हैरान रह गया. वह बोला, ''इस अनोखे अनाथालय के बारे में सुन कर वहां जाने की इच्छा हो रही है.''

''पीलू भैया, इस में क्या मुश्किल है? कोलंबो में मेरे चाचाजी रहते हैं. छुट्टियों में चाचाजी के पास दोचार दिन के लिए चलेंगे. सैर भी करेंगे और उस अनूठे अनाथालय को भी देख आएंगे.''

पीलू फौरन तैयार हो गया. स्कूल में 3-4 दिन की छुट्टी थी. नीलू ने मम्मीपापा से पूछ कर चाचाजी को अपने आने के बारे में खबर दे दी. चाचाजी भी उन के आने का समाचार सुन कर खुश हो गए. नीलू और पीलू दोनों श्रीलंका की राजधानी कोलंबो जा पहुंचे. चाचाजी उन को लेने एयरपोर्ट आए थे. उन के साथ घर जा कर उन्होंने आराम किया और उन्हें अपने मन की बात बता दी.

चाचाजी ने कैंडी जाने के लिए टैक्सी की व होटल में रहने का इंतजाम कर दिया. कैंडी पहुंच कर दोनों ने होटल में सामान रखा और निकल पड़े घूमनेफिरने के लिए. वहां का शानदार बौद्ध मंदिर दलदा मालीगाव देखा. मंदिर में बुद्ध का पवित्र दंत अवशेष रखा हुआ है. पूछने पर पता चला कि जुलाईअगस्त में इस पवित्र दंत अवशेष के सम्मान में 10 दिन तक 'एसला पेरहेरा' त्योहार मनाया जाता है. इस में गाजेबाजों और नर्तकों के साथ हर रोज रात शोभायात्रा निकाली जाती है. शोभायात्रा में 100 सजेधजे हाथी भाग लेते हैं. सब से आगे वाले हाथी पर एक पेटी में पवित्र दंत अवशेष रखा जाता है.

नीलू से बात करते हुए पीलू ने कहा, ''नीलू, लगता है, यहां पर हाथियों का बहुत सम्मान होता है.''

''हां, भारत में भी कर्नाटक और केरल में विशेष अवसरों पर हाथियों को सजाधजा कर शोभायात्रा निकाली जाती है.''

''तुम ठीक कह रहे हो भाई. अब हमें पिन्नावाला हाथी अनाथालय देखना चाहिए. उसी को देखने के लिए तो हम यहां आए हैं,'' पीलू ने सुझाव दिया.

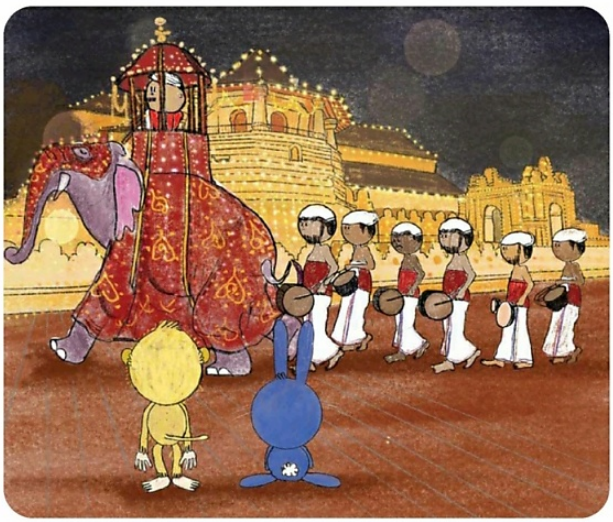

जब पीलू और नीलू दोनों अनाथालय पहुंचे, तो उन्होंने पिन्नावाला हाथी अनाथालय देखने के लिए टिकट खरीदे. वहां सचमुच बीमार, घायल, बूढ़े और छोटेछोटे हाथी रह रहे थे. डाक्टर बीमार और घायल हाथियों का इलाज कर रहा था. गाइड ने

बताया कि इस समय अनाथालय में 60 हाथी रह रहे हैं.

कुछ कदम आगे चल कर हम शेका हाथी के सामने रुक गए. पीलू शेका हाथी से पूछने लगा, ''दोस्त, तुम यहां कैसे पहुंचे?''

''मैं तुम से क्या बताऊं भैया, एक बार की बात है. मैं हर रोज नदी में नहाने के लिए जाता था. मैं वहां घंटों डुबकियां लगाता था, न जाने उस इलाके के आदमियों को क्या सूझी कि उन्होंने नदी के इर्दगिर्द गन्ने की खेती शुरू कर दी. मेरा नदी पर जाना मुश्किल हो गया. एक दिन गुस्से में आ कर मैं ने 14 लोगों को मार डाला,'' शेका ने उत्तर दिया.

''तब तो वहां के लोग तुम्हें मारने पर उतारू हो गए होंगे?''

''बिलकुल नहीं, मारने के बजाय वे मुझ जैसे हत्यारे को जंजीरों में बांध कर यहां छोड़ गए. यहां मुझे बड़े प्यार से रखा जाता है. मैं बहुत खुश हूं.''

उस की बात सुन कर पीलू और नीलू को विश्वास ही नहीं हुआ. उन को हैरान देख कर शेका बोला, ''आदमी का स्वभाव भी अजीब होता है. एक ओर उन्होंने मुझ हत्यारे की रक्षा की तो दूसरी तरफ बेकसूर 'राजा' को कुछ शिकारियों ने अंधा कर दिया.''

''क्या?'' उन्होंने पूछा.

''मैं सच कह रहा हूं. तुम खुद उस से उस की कहानी सुन सकते हो.''

इस के बाद नीलू और पीलू 'राजा' से मिलने के लिए चल दिए. पूछने पर राजा ने बताया कि एक दिन वह जंगल में अकेला घूम रहा था. कुछ शिकारियों ने अचानक उस पर गोलियां चला दीं. गोलियां उस की आंखों में लगीं और वह अंधा हो गया.''

''उस के बाद क्या हुआ?'' नीलू ने दुखी हो कर पूछा.

''कई दिनों तक मैं जंगल में भूखाप्यासा भटकता रहा. कुछ

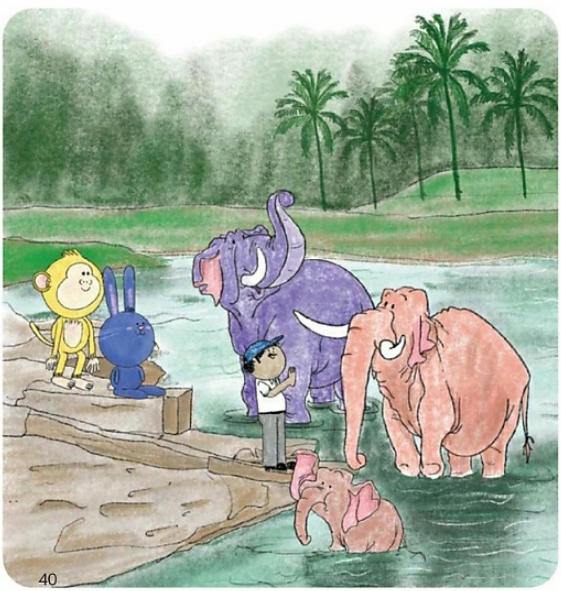

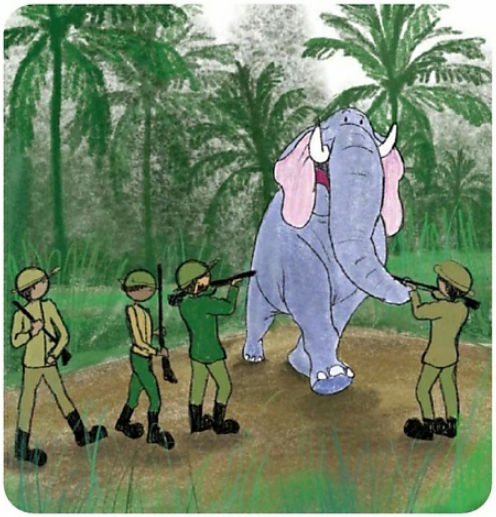

गांव वालों ने मुझे भटकते देख पुलिस को खबर कर दी. पुलिस वाले भी स्वभाव से काफी निर्दयी थे. उन्होंने मुझे लोहे की मोटी जंजीरों से बांध कर बड़े से हौल में छोड़ दिया. मेरे सारे बदन पर घाव हो गए. यह देख कर किसी को मुझ पर दया आई और वह मुझे यहां इस अनाथालय ले आया.''

''क्या तुम ठीक हो?'' पीलू ने पूछा.

''हां, लेकिन जख्मों को ठीक होने में लगभग 3 महीने लग गए. अब मैं एकदम स्वस्थ हूं,'' राजा ने राहत के साथ बताया.

पीलू और नीलू को राजा पर हमला करने वाले शिकारियों पर बहुत गुस्सा आया, पर वे कर भी क्या सकते थे.

अनाथालय के आगे घूमते उन को एक प्यारा सा, छोटा हाथी दिखाई दिया. दोनों ने पास जा कर उस से पूछा, ''तुम्हारा क्या नाम है?''

''मुझे सिंहराज कहते हैं.''

पीलू बंदर ने हैरान हो कर कहा, ''हो तो तुम हाथी, 'सिंहराज' तुम्हारा नाम कैसे पड़ गया?''

''मालूम नहीं, लेकिन सभी प्यार से मुझे 'सिंहराज' ही बुलाते हैं.''

''तुम को यहां कौन लाया?''

छोटे राजा ने अपनी कहानी सुनाई, ''एक दिन मैं अपने साथियों से बिछुड़ कर गहरे गड्ढे में गिरा था. मैं ने बाहर निकलने की बहुत कोशिश की, लेकिन निकल नहीं पाया. कुछ आदमियों की नजर मुझ पर पड़ गई, उन्होंने

मुझे गड्ढे से बाहर निकाला और यहां छोड़ गए. अब यही मेरा घर है.''

अनाथालय में सिंहराज जैसे और कई छोटेछोटे हाथियों को देख कर नीलू और पीलू खुश हो रहे थे. दोपहर के बाद सब हाथियों को नहाने के लिए नदी पर ले जाया गया. नीलू और पीलू भी उन को नहाते हुए देखने के लिए नदी पर जा पहुंचे. सब अपनी सूंड़ से एकदूसरे के ऊपर पानी उछालते, तरहतरह के खेल खेल रहे थे.

''नीलू, तुम्हारे सर का तो मुझे धन्यवाद करना चाहिए, जिन्होंने हमें इतनी अद्भुत जगह के बारे बताया,'' पीलू खुश हो कर बोला.

''आप ठीक कह रहे हो भाई, वे तो यह भी बता रहे थे कि हाथियों का यह अनाथालय पूरी दुनिया में अपनी तरह का अनूठा अनाथालय है.''

अनाथालय देखने के बाद नीलूपीलू होटल आ गए. आराम करने के बाद दूसरे दिन उन्होंने कैंडी का प्रसिद्ध रौयल बौटनिकल गार्डन देखा. 60 हैक्टेयर पर फैले इस गार्डन में दुर्लभ प्रजाति के अनेक पेड़पौधे मौजूद थे. हालांकि जब वे विशाल जावाअंजीर के पेड़ के पास आए जो 2,400 वर्ग मीटर से अधिक क्षेत्र में फैला था. इसे देख कर उन के आश्चर्य की सीमा नहीं रही. इस के अलावा गार्डन में तरहतरह के मसालों की सौंधीसौंधी खुशबू फैल गई.

दो दिन में नीलू और पीलू केवल यही देख पाए थे. दोबारा आने का फैसला कर वे कोलंबो वापस आ गए. उन्होंने चाचाजी का धन्यवाद किया. उन से इजाजत ले कर वे अपने घर वापस आ गए. स्कूल जा कर उन्होंने अपने सहपाठियों के साथ पिन्नावाला हाथी अनाथालय की अपनी रोमांचक यात्रा के बारे में दिलचस्प कहानियां साझा कीं. उन के अनुभवों को सुन कर सहपाठी हैरान रह गए. ●

TITHEE DIXIT

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

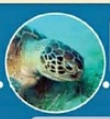

हमारी और उन की त्वचा

मनुष्य कछुए की तरह बिलकुल नहीं दिखाई देते हैं, लेकिन एक चीज ऐसी है जो उन्हें जोड़ती है. उन की स्कीन प्रोटीन यानी त्वचा के प्रोटीन एक हैं जो उन की त्वचा की रक्षा करती है.

शोधकर्ताओं के एक समूह ने यह पता लगाया है कि 310 मिलियन वर्ष पहले मनुष्यों और कछुओं के पूर्वजों में जीन्स जो कि स्कीन प्रोटीन के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं, एक समान पाए गए हैं यानी ये जीन्स कौमन हैं. कछुओं का कवच नीचे की मुलायम त्वचा की रक्षा करता है. ठीक इसी तरह मनुष्यों की त्वचा की परतें होती हैं जो नाड़ियों और नीचे की मुलायम त्वचा की परतों की रक्षा करती हैं.

मनुष्यों और कछुओं के लिए यह सुरक्षात्मक परत त्वचा को जीवाणु और एलर्जी से संक्रमित होने से बचाती है यानी त्वचा अंदर प्रवेश करने से इन बीमारियों को रोकती है.

डायनासौर का दौर जो लगभग 200 मिलियन साल पहले था, उस दौरान भी कछुए पाए गए थे. इस तरह से ये सांप, मगरमच्छ और ऐलिगेटर से भी पुराने यानी बुजुर्ग हैं.

दादाजी और अंतर्राष्ट्रीय पिकनिक दिवस

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

दादाजी समाचारपत्र पढ़ रहे थे. तभी रिया और राहुल ने हस्तक्षेप किया.

दादाजी, मुझे बताइए, आज कौन सा दिन है?

आज शुक्रवार है.

दादाजी, यह बात नहीं है. आज के दिन की खासियत क्या है?

आज तो तुम्हारा जन्मदिन भी नहीं है और जहां तक मुझे याद है यह तुम्हारे मम्मीपापा की शादी की वर्षगांठ भी नहीं है.

इसलिए आज हम घूमने कहां जाएंगे?

दादाजी, हम जन्मदिन के बारे में बात नहीं कर रहे हैं. आज अंतर्राष्ट्रीय पिकनिक दिवस है, जिसे 18 जून को मनाया जाता है.

राहुल, हम पिकनिक के लिए बाहर नहीं जा सकेंगे, क्योंकि हमें महामारी ने घेरा हुआ है.

दादाजी, हम पिछले साल भी पिकनिक पर नहीं गए थे.

हां, कोरोना वायरस ने हमारी सारी खुशियां छीन ली हैं.

नहीं, ऐसा नहीं है. ठीक है, हम सभी पिकनिक पर जाएंगे.
सच में दादाजी? हम कहां जा रहे हैं?
हम अपने बगीचे में जाएंगे.
बगीचे में जाएंगे? यह कितना मजेदार रहेगा?
हम बाहर बैठेंगे, खेल खेलेंगे, कुछ अमेजिंग स्नैक्स खाएंगे और अपने समय को ऐंजौय करेंगे. यह बिलकुल अन्य पिकनिक की तरह होगा जैसे तुम पहले जाते थे और मजे करते थे.
हां दादाजी, हम सभी एकसाथ मिल कर अंत्याक्षरी भी खेल सकते हैं.
SONAL

असली महामारी

कहानी ● मखदूम आजम

आनंदवन की रानी शीना शेरनी आज बहुत परेशान लग रही थीं. सुबह से ही वह अपनी गुफा में इधरउधर टहल रही थीं. परेशानी उन के चेहरे पर साफ झलक रही थी.

उन के मंत्री रौनी भेड़िया ने अंदर आते ही उन की चिंता को भांप लिया.

''गुडमौर्निंग रानी,'' रौनी ने झुक कर रानी को सलाम किया.

''आओ, आओ मंत्री, गुडमौर्निंग,'' रानी शीना ने उस का अभिवादन स्वीकार करते हुए कहा.

''क्या बात है महारानी, आप कुछ परेशान सी दिख रही हो,'' रौनी ने पूछा.

रानी शीना कुछ क्षणों के लिए चुप हो गईं. उन की उदासी ने शायद उन के मुंह पर ताला लगा दिया. वे किसी गहरी चिंता में डूब गईं.

''महारानी, क्या बात है? कोई परेशानी हो तो मुझे बताएं, मैं निश्चित ही पूरी कोशिश करूंगा उसे दूर करने की,'' रौनी ने फिर से कहा.

रानी शीना ने एक लंबी सांस खींची और कहना शुरू किया, ''क्या बताऊं रौनी, हम पर बड़ी मुसीबत आई है. पड़ोस के जंगल चंदनवन के राजा क्रूरसिंह ने एक संदेश भेजा है. उन के जंगल में एक गंभीर महामारी फैली है, जिस से वहां के जानवर त्राहिमाम मचा रहे हैं. राजा क्रूरसिंह इस महामारी को रोकने में विफल हैं, क्योंकि वे अपनी मौजमस्ती में रहते हैं. उन्हें अपने साम्राज्य की बिलकुल चिंता नहीं और अब वे चंदनवन के सारे जानवरों को आनंदवन में शिफ्ट करना चाहते हैं, लेकिन मुझे डर है कि कहीं यह महामारी हमारे जंगल में भी न फैल जाए. तुम ही बताओ मंत्री, हमें अब क्या करना चाहिए?''

''महारानी, अपने जानवरों की सुरक्षा और उन के स्वास्थ्य की देखभाल करना राजा का

प्रथम कर्तव्य है, किंतु अपने साथी जानवरों की चिंता करना भी जरूरी है. आखिर हम जानवर हैं,'' रौनी ने कहा.

''किंतु उपाय क्या है?'' रानी ने सवाल किया और फिर पूछा, ''लेकिन हमें किस विकल्प का पालन करना चाहिए?''

''मेरे हिसाब से सब से पहले हमें इस महामारी की सही जानकारी होनी चाहिए और फिर हमें राजा क्रूरसिंह से यह भी जानना चाहिए कि उन्हें अपने जानवरों की चिंता क्यों नहीं है? मेरा मानना है कि हम किसी गुप्तचर को चंदनवन भेजें और वहां की ग्राउंड रिपोर्ट क्या है यह समझने की कोशिश करें,'' रौनी ने समझाते हुए कहा.

''हमें तुम्हारा सुझाव पसंद है मंत्री,'' रानी ने सहमति जताई.

हप्पू बंदर को इस काम के लिए चुना गया. हप्पू आनंदवन की नाटकमंडली का सदस्य था, रूप बदलने में तो वह माहिर था. उस ने चंदनवन के बंदरों से दोस्ती की और जल्दी ही उन का दोस्त बन गया. सारे बंदर सर्कस की कहानियां सुनने को बेताब रहते और हप्पू उन्हें तरहतरह की बनावटी कहानियां सुनाता रहता.

चंदनवन में महामारी की बात सच थी. हर दिन कोई न कोई जानवर इस महामारी के चलते मर रहा था. लेकिन राजा क्रूरसिंह अपनी गुफा से बाहर भी नहीं आते. उन्होंने अपनी गुफा की सुरक्षा को बढ़ा दिया था.

हप्पू ने सुना था कि इंसानों के शहर में जब महामारी फैली तो वहां लोगों ने मास्क और सैनिटाइजर का इस्तेमाल किया, लेकिन जंगल में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी. इसलिए बीमारी जंगल में आग की तरह फैलती जा रही थी. हप्पू ने पत्तों का इस्तेमाल कर कुछ मास्क बनाए और जानवरों को सुरक्षित रहने के लिए बांट दिए.

एक दिन जब हप्पू रात में पेड़ों पर उछलता हुआ जंगल का भ्रमण कर रहा था तो उसे

पास की एक गुफा से कुछ आवाजें आती सुनाई दीं. वह पास जा कर वहां झाड़ियों में छिप गया. कल्लू लोमड़ी, फैटी भालू और रंगा सियार अंदर कुछ साजिश रच रहे थे.

''जल्दी कर फैटी, तेरे चक्कर में लेट हो गए तो पकड़े जाएंगे. सुबह होने से पहले हमें ये बेकार दवाइयां चंदनवन के तालाब में घोलनी हैं,'' कल्लू फुसफुसा रही थी.

''और फिर उस तालाब का दूषित पानी पी कर सारे जानवर बीमार हो जाएंगे, हा... हा... हा,'' रंगा सियार ने जोर से हंसते हुए कहा.

''चुप रह और धीरे बोल, कोई सुन लेगा,'' कल्लू ने कहा.

''राजा क्रूरसिंह ने हमें यह काम सोचसमझ कर दिया है. उन का भरोसा नहीं टूटना चाहिए,'' फैटी बोला.

हप्पू को अब महामारी की असल वजह पता चल चुकी थी. वह सुबह होने से पहले ही रानी शीना को ये बता देना चाहता था. वह तुरंत वहां से आनंदवन की ओर चल पड़ा.

जब हप्पू ने उन्हें यह जानकारी दी तो रानी शीना पूरा माजरा समझ गईं. वे रौनी और कुछ सैनिकों को ले कर तुरंत ही चंदनवन की तरफ चल पड़ी.

हप्पू बंदर ने चंदनवन के अपने दोस्तों को चुपके से बुला लिया, उन की सहायता से चंदनवन के और जानवर भी वहां आ गए. सब एक बड़े से पेड़ के पीछे छिप गए.

जैसे ही कल्लू लोमड़ी, फैटी भालू और रंगा सियार तालाब में दवा मिलाने वाले थे, सारे जानवरों ने उन्हें घेर लिया. रानी शीना ने गुस्से में जोर की दहाड़ लगाई तो तीनों कांपने लगे.

''हमें माफ कर दीजिए, महारानी, हमें ऐसा करने के लिए राजा क्रूरसिंह ने कहा था,'' तीनों गिड़गिड़ाते हुए बोले.

''हमें पूरी बात बताओ,'' रानी ने दहाड़ते हुए पूछा.

चंदनवन के सारे जानवर भी पूरा किस्सा सुनने को उतावले थे.

कल्लू लोमड़ी ने कहना शुरू किया, ''राजा क्रूरसिंह बहुत ही आलसी और अय्याश राजा हैं. उन्होंने शहर के इंसानों के साथ एक डील की. वे इस जंगल को खाली करवाने में इंसानों की मदद कर रहे हैं ताकि इंसान यहां अपना कारखाना खोल सके. इस के लिए उन्होंने महामारी फैलने की झूठी अफवाह फैलाई और खराब हो चुकी दवाइयों को चंदनवन के तालाब में घोल दिया. सारे जानवर इसी तालाब का पानी पी कर बीमार पड़ रहे थे. वह चाहते हैं कि जब सारे जानवर बीमारी के डर से दूसरे जंगल में शिफ्ट हो जाएंगे तो वह आराम से इंसानों को यह जंगल बेच देंगे. बदले में इंसान अय्याशी और रहने का सारा सामान उन्हें मुहैया कराएंगे.

''इस काम के लिए उन्होंने हम को चुना और रोज अच्छाअच्छा भोजन और रिश्वत का लालच दिया,'' रंगा सियार गिड़गिड़ाते हुए बोला.

''मुझे भी उन्होंने रोज शहद का लालच दिया,'' फैटी भालू भी बोल पड़ा.

सारे जानवर गुस्से से तिलमिला गए और उन्होंने वहीं पर कल्लू, रंगा और फैटी को पीटना शुरू कर दिया, लेकिन रानी शीना ने उन्हें रोक दिया.

''इन्हें इस तरह सजा देना गलत है और वैसे भी सजा राजा क्रूरसिंह को पहले मिलनी चाहिए,'' रानी शीना ने समझाया.

सभी जानवर रानी शीना की बात से प्रभावित हुए और राजा क्रूरसिंह की गुफा की ओर चल पड़े.

चंदनवन के जानवरों और रानी शीना के सैनिकों की मदद से राजा क्रूरसिंह को बंदी बना लिया गया. कल्लू, रंगा और फैटी को भी गिरफ्तार कर लिया गया.

रानी ने सारे जानवरों को संबोधित करते हुए कहा, ''मेरे प्यारे दोस्तो, इस वक्त हर तरफ महामारी फैली हुई, लेकिन सब से बुरी महामारी आज भी लालच और अज्ञानता ही है. हमें इस महामारी से बचना ज्यादा जरूरी है. इसलिए आप सब जानवर खुद को इस

महामारी से बचाएं तो आप का परिवार और आप का जंगल सुरक्षित रहेगा.

''आप लोग अब अपने राजा का चुनाव खुद ही करें, एक अच्छा राजा अपने राज्य को कभी बिखरने नहीं देता.''

तभी गुल्लू हाथी बोल उठा, ''कितना अच्छा होगा, अगर चंदनवन भी आनंदवन का ही हिस्सा हो जाए. आप से बेहतर हमारे जंगल की रानी कौन हो सकती हैं,'' सारे जानवर गुल्लू हाथी के सुझाव से सहमत हो गए और ताली बजाने लगे, फिर सब की सहमति से चंदनवन भी आनंदवन का हिस्सा हो गया. इस तरह चंदनवन आनंदवन का हिस्सा बन गया और वे सभी खुशीखुशी साथ रहने लगे. ●

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 23 : रास्ता बताओ :

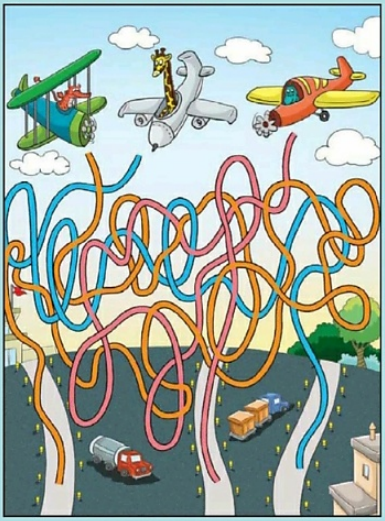

पृष्ठ 18 : घर का चुनाव करें :

घर -1- 234 किलोमीटर प्रति सप्ताह
घर -2- 245 किलोमीटर प्रति सप्ताह
घर -3- 238 किलोमीटर प्रति सप्ताह
घर -4- 256 किलोमीटर प्रति सप्ताह
शालिनी और उस के मम्मीपापा को घर नंबर-3 में जाना चाहिए ताकि प्रति सप्ताह कम से कम यात्रा करनी पड़े.

पृष्ठ 23 : गंतव्य स्थान बताएं :

जैनी लद्दाख जा रही है.
सपना पंजाब जा रही है.
सुशांत महाराष्ट्र जा रहा है.
फराह गोआ जा रही है.

WE SPEAK IN 30 DIFFERENT CONSUMER VOICES.

BECAUSE EVERY BRAND IS UNIQUE.

With virtually every age group, income segment and language covering 30 million Indians, we are the most diverse magazine group in India. So next time you want to address anyone in India, you are better off speaking to the **Delhi Press** Group today.

DELHI PRESS

To subscribe to our magazines Call/SMS/WhatsApp: 08588843408,
E-mail: subscription@delhipress.in, You can also subscribe online at www.delhipress.in/subscribe

THE CARAVAN CHAMPAK सरिता गृहशोभा चंपक मुक्ता सरस सलिल फार्म फूड सत्यकथा मनोहर

Highlights CHAMPS Highlights Genies MOTORING

(REGISTERED) RNI 16420/68 DL(C)-14/1093/2021-23 WPP U(C)148/40/2021-23 P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 16 to 22 Published on 12/06/2021. Pgs. 52.